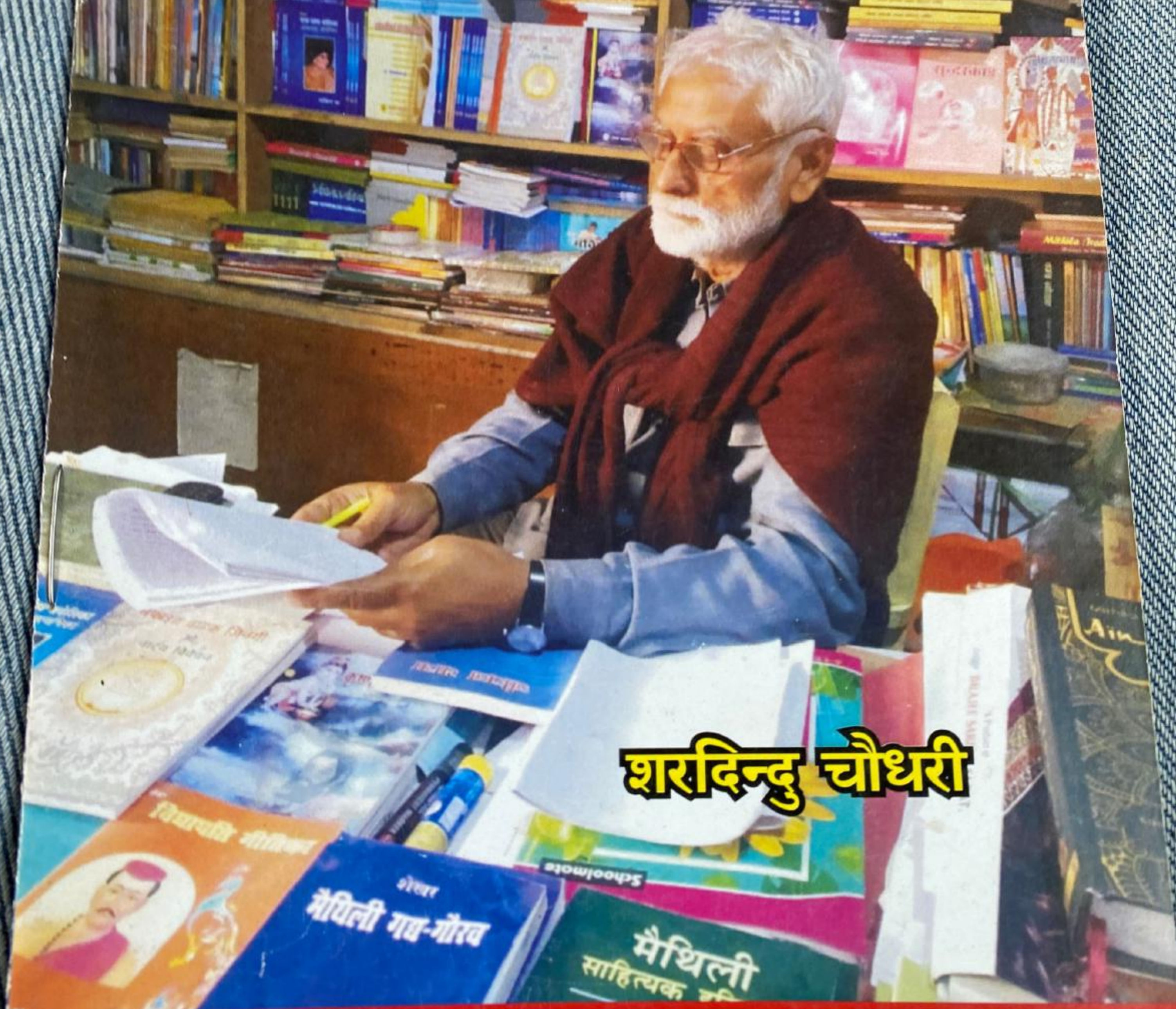
मर्मान्तक – शब्दानुभूति

बात–बातपर बात–II



शरदिन्दु चौधरी

मर्मान्तक – शब्दानुभूति

बात – बातपर बात – II

खंड – 2

शरदिन्दु चौधरी

शेखर प्रकाशन

पटना

प्रकाशक : शेखर प्रकाशन
2A/39, टेक्स्ट बुक कालोनी
इन्द्रपुरी, पटना-800024

प्रथम संस्करण : जून-2020 (कोरोनाकाल)

मूल्य : सहयोग-~~सौहार्द~~ 50=00

शब्द संयोजन : अजय कुमार (टुटु)

मुद्रक : जय माता दी ऑफसेट
मछुआटोली, पटना-4

Marmantak-Shabdanubhuti

BY

SHARDINDU CHAUDHARY



अर्द्धांगिनी श्रीमती चित्रा चौधरीकेँ

सप्रेम – सस्नेह

भूमिका

परिवर्तन

कोरोना वायरसक प्रभाव एखन धरि भने शारिरिक रूपें हमरापर नहि पड़ल हो, आर्थिक पक्ष भने नहि पंगु बनौने होअय, मानासिक घात-प्रतिघात हमर मानसपटल पर एतेक जबर्दस्त प्रहार कयलक जे हमर सोचकेँ भूकंपसँ बेसी डोला देलक आ हम निर्विकार, निश्चेष्ट भेल सभ किछु पी गेलहुँ। सम्पूर्ण जीवनमे की पौलहुँ की गमौलहुँ से सभ दृष्टिक सोझां सिनेमा जकाँ अबैत गेल। बहुत किछु आयल जकरा हम कागजपर उतारबाक प्रयास कयलहुँ। बहुत बातपर कलम संग देलक तँ बहुत बात कागज भीजि गेलाक कारणे कलम रुकि गेल।

माता-पिता हमर आदर्श छथि तेँ हुनक अंतिम दर्शनक गाथाक संग कलम चलल तँ एहनो प्रसंग आयल जे हमर जीवनकेँ नव मोड़ देलक। जेँ कि ई सभ लिखब दुस्सह बुझना गेल तेँ चारि-पांचे टा क्रम लीखि विराम लऽ लेलहुँ।

कोरोना काल नमरैत गेल आ हम विवश भेल दृश्य सभ देखैत रहलहुँ। पुनः कलम चलल मुदा अपन पसिन्द व्यंग्यकेँ कतहु नहि ताकि सकल, आनो विषयक लेखनमे स्फुरण नहि भेल तेँ बड़ नीक किछु तँ करी से सोचि किछु-किछु लिखय लगलहुँ। ई की अछि से स्वयं नहि बुझि पाबि रहल छी मुदा लिखाइत गेल आ समय कटैत गेल। जिनगीक परतक खुलबाक क्रममे किछु शब्द कानमे टकरायल आ बोध भेल। एहि शब्द सभक अर्थ शब्दकोशमे स्पष्ट देल अछि मुदा व्यावहारिक जीवनमे ई अपन रूप बदलैत प्रकट होइत अछि। हमर चेष्टा रहल जे ओहने शब्दक चयन करी जे हमरे जकाँ मूक भऽ गेल अछि आ आकुल-व्याकुल क्षणकेँ मात्र देखि रहल अछि। एहि सभमे शब्दक व्याख्या करबाक चेष्टो नहि कयलहुँ अपितु कलम जे अर्थ देखबैत गेल से प्रकट होइत गेल। तेँ जँ ई कतहु अनसोहांत लागय तँ क्षमा करब कारण पहिल खंडक 'बात-बातपर बात' मे हम जतेक सशक्त रही ततबे अपनाकेँ निरीह पबैत छी। एक वर्षमे एतेक परिवर्तन होइत छैक से नहि

बूझल छल। अनुभवक गठरीमे ईहो परिवर्तन बेस महत्वपूर्ण अछि से हम मानैत छी।

हम अपनाकेँ पत्रकार मानैत अयलहुँ अछि ताहिपर एखनो कायम छी तेँ जे देखैत छी, भोगैत छी सैह टा लिखैत छी। ई अत्यल्प छोट संग्रह 'मर्मान्तक-शब्दानुभूति'क नामसँ प्रस्तुत अछि जे हमरा पहिले बेर फुरायल। हम किछु लिखैत रहैत छी तखने शीर्षकक उद्भव हमरा मोनमे होइत अछि। ईहो ओहने उद्भवक प्रतिफल अछि। जँ रहलहुँ तँ एकर तेसर कड़ी अगिला वर्ष प्रस्तुत करब आ जँ नहि तँ हमरा विषयमे अनके मुँहसँ सुनब। बस एखन एतवे !

-शरदिन्दु चौधरी

30/05/2020

विषय–क्रम

महाकालक वज्राघात	– 9
'शेखर'क अवसान	– 12
अग्रेलखसँ भेंट	– 15
सफलता ओ विफलताक कारण	– 17
सुखक सेहन्ता	– 21
माता-पिता	– 24
स्वाभिमान	– 25
अधिकार	– 26
अनुशासन	– 27
अवसर	– 28
शिक्षा	– 29
नियंत्रण	– 30
निर्माण	– 31
विनाश	– 32
आस्था	– 33
काज/कार्य	– 34
परीक्षा	– 36

भय — 37
चित्तवृति — 39
सुख-शान्ति — 40
घृणा — 41
भोजन — 42
पीड़ा — 44
इच्छा — 45
तनाव — 46
अन्तर — 47
प्रेरक — 48



— 37
— 39
— 40
— 41
— 42
— 44
— 45
— 46
— 47
— 48

महाकालक वज्राघात

हमर असाध्य टाइफायडक बीमारी, मिश्रजीक नोकरी-संकट घरकेँ तोड़ि देने छल। लालकक्का (पिता) अपन पूर्ण ताकतिसँ संघर्ष कऽ रहल छलाह। मिश्रजीक नोकरी बचयबा लेल बहुतो टाका बैंककेँ दऽ देलथिन मुदा सभ निरर्थके भेलैक। माँक चलाकी कही वा ममता मीना (दीदी)क गहना नहि बिकयलै लालकक्का दीदीकेँ कहि देलथिन जे गहनो बेचि कऽ बैंककेँ दऽ देलिऐक मुदा से भेलै नहि, माँ ओकर सभटा गहना एकटा ग्लैक्सोक डिब्बामे बंद कऽ राखि देलकैक जे बादमे दीदीकेँ दऽ देलक। बैंकक पाईक उनटफेर भेल छलैक तेँ नहि बचि सकलाह। नोकरी तँ गेबे कयलनि अपना संगे तीन टा आर प्राणकेँ संकटमे फंसा लेलनि।

जेँ कि केस भऽ गेल छलैक तेँ मिश्रजी केँ नुका कऽ राखल गेलनि आ हम केसक पैरवी करय बाढ़ गेल करी। केस बहुत दिन चलल। एहि सभ उठापटकमे हमर पढ़ाइ तँ बाधित भेबे कयल जे माँ आ लालकक्का टुटैत रहलाह-अर्थ आ शरीर दुनूसँ। पैघ परिवार भऽ जयबाक कारणे माँ जे चारि बजय उठय से राति बारह बजे चैन लिअय। पूर्वमे भेल एक्सीडेन्टक कारणे ओ चिन्ताक बात सहि नहि सकय आ ओकर दिमागी संतुलन सेहो बरोबरि गड़बड़ा जाइक।

कहियो ओ लालकक्काक लिखल उपन्यास ई बतहा संसारक पाण्डुलिपिकेँ एकरंगामे बान्हि पूजा स्थल पर राखय तँ कहियो सिरमामे। फेर ठीक भऽ जाय तँ बाकसमे राखि दैक।

हमर एम.ए.क परीक्षाक सत्र बहुत लेट भऽ गेल छल। चारि पत्रक परीक्षा भऽ गेल छल। 15 जनवरी 1979 केँ एकाएक माँक मोन बड़ खराप भऽ गेलैक। सांसक तकलीफ बढ़ि गेलैक। ओना ओ पूर्वहिसँ दम्मासँ पीड़ित छल मुदा बादमे आबिकऽ हृदयरोगसँ सेहो पीड़ित भऽ गेलि छल। जक्कनपुरक हमर पारिवारिक डाक्टर शंभुशरण सिंह परामर्श देलनि जे अस्पताल लऽ जइयनु। हम सभ सैह कयलहुँ। तुरत माँकेँ लऽ अस्पताल गेलहुँ। ओतऽ दवाइ-वीरो भेलैक तँ हालतिमे किछु सुधार भेलैक।

मुदा दोसर दिन तँ महाकालक दिन छल। भोरेसँ खूब ठंढा पड़लैक आ भरि दिन बुन्दाबुन्दी होइत रहल। माँक सांस कखनो उन्टा चलऽ लगैक तँ फेर ठीक भऽ जाइ। हमर तत्कालीन परिचित हाउससर्जन आ मैथिलीक तेज-तर्रार, युवा लेखक डॉ. धीरेन्द्र सिंहकें तकैत रहलहुँ मुदा ओ भेंट नहि भेलाह। पता चललनि तँ साँझमे अयलाह। अस्पतालमे माँक हालति देखि खूब डाँट-फटकार कयलनि कर्मचारी सभक। आनन फाननमे दवाइ बदलल गेल। मुदा माँ तँ मृत्युरथपर सवार भऽ गेलि छलि। ओहि दिन शुक्र रहैक। ओ संतोषी माताक व्रत ठानि लेलक आ डाक्टरक कतबो कहलापर मुंहमे दवाइ नहि जाय देलक। हारि कऽ सूई सभ देलनि डाक्टर लोकनि। माँ उठि कऽ बैसि रहल। अपनेसँ केस झाड़लक आ बाथरूम सेहो गेलि।

लालकक्काकें जें कि हाइपर टेन्शन रहनि तें ओ अस्पताल नहि गेल रहथि। घरेपर सभ धीयापूता संग रहथि। बड़की दीदी, पाठकजी आ हम अस्पतालमे रही। सांझमे माँ हमरा बजौलक आ धीरेसँ कहलक-चलि जो घर आ जल्दीसँ खा लिहें। देर नहि करिहे, ने तँ सभ दस एगारह दिन नोन नहि खाय देतौक। हमरा भेल जे ओ फेर गड़बड़ा रहल अछि। मुदा ओ जिद्दपर अड़ि गेल जे हम जल्दीसँ जल्दी घर चल जाइ। अन्तमे हम झुकि गेलहुँ। जखन हम विदा होमऽ लगलहुँ तँ ओ फेर एकटा आदेश कयलक-तोरा हमरे सप्पत, ई परीक्षा नहि छोड़िहें। 'हम'हँ' कहैत डेरा लेल विदा भेलहुँ।

डेरा पहुँचि भोजन कऽ ठाढ़ भेलहुँ कि सामनेवला गोपाल बाबूक पत्नी दौड़लि अयलीह आ कहलनि 'तुरत अस्पताल जाओ। माँ बहुत सीरियस है। हँ, कुछ रूपया भी ले लो दवाइ वगैरह लेनी है।' हमरा लालकक्का चारि सय टका देलनि। हम मकान मालिकसँ सेहो पाँच सय टाका मांगि अस्पताल विदा भेलहुँ ई निश्चय कयने जे महाकालकें माँ लग पहुँचय नहि देबै। मुदा ई हमर भ्रम छल ओ हमरासँ माँकें छीनि कऽ पहिनहि अस्पतालसँ चलि गेल छल। हम अस्पताल पहुँचलहुँ तँ 17 ए नम्बरवला बेड खाली छल। क्यो कतहु नहि। लागल जे क्यो कानमे कहलक माँ तँ घरपर चल गेलौक। 'तावत एकटा नर्सक नजरि हमरापर पड़लैक-ओ बाजि उठल-डेड बाडी लेकर लोग यहाँ से चले गये।'

हम किछु बजलहुँ नहि। पुछबाक साहसो नहि भेल। हमर सर्वस्व छिना गेल छल। हमर प्रेम, हमर स्नेह, हमर आराध्य आ हमर छाहरि छिना

गेल छल। अपने भुखले रहि हमरा भरि पेट खुआबयवाली अन्नपूर्णा हमरा खयबाक आदेश दऽ उपासले विदा भऽ गेलि छलि।

हम भागल-भागल डेरा अयलहुँ। दलानपर सैकड़ो लोकक धर्रोहि लागल छल। करुण क्रन्दनसँ पूरा वातावरण दलमलित छल। लालकका केँ घेरने अनेक साहित्यकार बैसल छलाह। एक दिस माँक शरीरकेँ घेरि सभ बहिन झौहरि कऽ रहल छल तँ रंजू आँखि तकिते बैसल बेहोश छल। एही दलानपर सालमे एक दू बेर सुमन-किरण मधुप आ अमरजीक गीत-कविताकेँ सुनबा लेल भीड़ लगैत छल। आइयो साहित्यकार लोकनिक बेस जुटान छल दलानपर मुदा सब मूक-बधिर बनि 'शेखर'क जिनगीक नाटकक चरमोत्कर्षक दर्शक टा बनल छलाह। आ हम चुपचाप महाकालक एहि वज्राघातकेँ कहि रहल छलिऐक-जो रे दुष्ट, तोँ माँक शरीर हमरासँ छीनि कऽ इतरा रहल छेँ। मुदा जानि ले जे माँ हमरासँ कहियो अलग नहि होयत जावत ओकर देल ई शरीर पृथ्वीपर ठाढ़ रहतैक। ठीके माँ आइयो हमर प्रत्येक सांसमे, प्रत्येक क्षण हमर प्रत्येक गतिविधिमे हमरा संग रहैए आ तेँ हमर जीवन-यात्रा निष्कंटक चलि रहल अछि।

कोरोना लाकडाउन, 26.3.2020 ●

'शेखर'क अवसान

इन्डियन नेशन-आर्यावर्त पत्र समूह बंद भऽ गेल। संगहि 'मिहिर' सेहो। लगभग 80 वर्षक जीवन जीबैत मिथिला मिहिर सभ रूपमे आयल। पहिने मासिक रूपमे 1909-54 धरि, फेर सितम्बर 1960 सँ फरवरी 1984 धरि साप्ताहिक रूपमे, फेर दैनिक रूपमे 20 फरवरी 1984 सँ जून 1987 तक आ तकर बाद पाक्षिक आ किछु अंक मासिके रूपमे जेना प्रारंभ भेल छल आबि सदाक लेल बन्द भऽ गेल। आब ओकर इतिहास टा बांचल अछि, सदेह कतहु-कतहु अछि। भीमनाथ झाजीक कृपा आ तत्परतासँ मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागमे ओकर 'दर्शन' भऽ सकैछ। सत्य कही तँ ईहो शतक नहि लगा सकल पत्रक रूपमे। ओना हम आशान्वित छी एकर किछु लेखक अपन आयुक शतक लगौताह जाहिमे पं० गोविन्द झा आ पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अग्रसर छथि।

हमर ई इच्छा पूर होयबे करत मुदा आर्यावर्त पत्र समूह बंद भेलापर आ हमर नोकरी मिथिला मिहिर बंद भेलासँ छुटि गेलापर हमर अनेक इच्छा जन्म लैते मरि गेल। लालकक्का एहिसँ बहुत मर्माहत भऽ गेलाह। हुनक रक्तचाप लगातार बढ़ल रहनि, निन्न से नहि होइन। एहि बीच ओ एकटा जिद्द धऽ लेने रहथि जे आब बिनु पोताक मुंह देखने चलि जायब। से बात ततेक ने बढ़ल जे हमर सक नहि चलल आ पुनः हमरा घरमे तेसर पुत्रीक रूपमे दीप्तिक जन्म भेल। दीप्तिक जन्मक अवसर पर हमरा बहुतो लोक सात्वना दिअय जे की करबैक बेटा-बेटीमे कोनो अन्तर नहि होइत छैक। मुदा हमरा आ चित्रापर एकर कोनो असरि नहि पड़ल। दीप्ति हमरा सभक सन्तान छल, अप्रिय कोना लगैत। स्वाति, प्रीति संग दीप्ति सेहो हमर घरकेँ शोभायमान करय लागलि। सभसँ आश्चर्यक विषय ई छल जे लालकक्का दीप्तिकेँ सभसँ बेसी मानय लगलथिन आ प्रतिदिन बाजथि एकर पयर बड़ नीक छैक ई अपना बाद भाइकेँ जरूर आनत।

हुनक ई बात अक्षरशः सत्य भेल मुदा ने हुनक इच्छा पूरा भेलनि आ ने हमरे जे ओ अपना आँखिये पोताकेँ देखितथि। हमर नोकरी छुटबाक

समाचार हुनका तोड़ि देलकनि। आब बहुत बात बिसरय लगलाह, जे व्यक्ति डालडाक बनल वस्तु तीसो वर्षसँ छोड़ने छल से, सिंघाड़ा खाय लगलाह, दाँत लगबाय दालमोट खाय लगलाह, ककरो दलानपर जा कऽ बैसय लगलाह। कखनो प्रवासीजीक खोज करथि, कौखन मुखियाजी, बटुक भाइ, प्रभासजी, गुंजनजीसँ भेंट करबा लेल बेकल भऽ उठथि। एहन सन जेना ओ औना रहल होथि आ चैन पयबा लेल हिनका सभसँ गप्प करय चाहथि। अपन आत्मीय लग बैसय उठय चाहथि। दू-चारि बेर हम कतहु-कतहु लैयो गेलियनि मुदा हुनका चैन कहाँ होइनि। हँ, ओ अंतिम साल भरि प्रवासी जीसँ गप्प करय चाहथि मुदा से संभव नहि भेलनि। हमरा कहलोपर प्रवासीजी कहियो भेंट नहि कयलथिन अंत धरि। प्रभासजी आ मुखिया जी, बटुक भाइ बरमहल आबथि।

हुनक एहि स्थितिसँ हम घबड़ा गेल रही। ई बुझाय लागल जे लालकक्का हमरा सभसँ दूर भऽ रहल छथि। बेरोजगार होयबाक कारणे हमर स्थिति लचरि गेल छल। तीन टा नेना, अपने दुनू प्राणी आ लालकका-कुल छओ गोटाक परिवार आ आमदनी एक्को पाइ नहि।

एहि समयमे हम प्रूफरीडिंगक किछु काज लेलहुँ आ प्रेसे-प्रेसे जाय लगलहुँ। मुदा इन्द्रपुरी आ मुसल्लहपुरक दूरी ततेक छलैक जे बड़ कष्ट होअय, तथापि कहुना पयरे जाइ आबी आ तकर बाद काज करी। धीरे-धीरे सय-डेढ़ सयक रोज काज भेटय लागल। मुदा हमरापर तँ वज्र खसबाक छल से आखिर खसिये पड़ल 28 मार्च 1990 कें होलीक दस दिन बाद। लालकक्का घरेमे खसि पड़लाह आ कौमामे चल गेलाह। हम गांधी मैदान लग रही, हमर पड़ोसी साइकिलसँ तकैत हमरा खबरि देलनि आ हम सोझे अस्पताल पहुँचलहुँ। लालकक्का अचेत छलाह-निःशब्द, कोनो प्रतिक्रिया नहि।

एहि स्थितिमे ओ सात दिन रहलाह। नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, आजमे हुनक फोटो संग अस्वस्थताक खबरि छपल तँ विशेष रोगीक रूपमे हुनका कॉटेजमे देल गेलनि आ आजुक प्रसिद्ध चिकित्सक विजय आचारी हुनक चिकित्सा आरंभ कयलनि। 28 मार्च 1990 कें 10 बाजि कऽ दस मिनटपर हुनक स्थिति आर गड़बड़यलनि। विजय आचारी लालकक्काक पयर पकड़ि कानय लगलाह आ बजलाह-बाबा आपने मेरे कैरियर को बड़ा धक्का दे दिया। कुछ दिन और रह जाते तो आपका क्या बिगड़ जाता।

विजय आचारीक की बिगड़लनि से तँ हम नहि बुझि सकलहुँ। हमर सभ किछु बिगड़ि गेल। तावत् लालक्का छलाहे। पाठकजी (हमर जेठका बहिनोइ) मंत्रक जाप जोर-जोरसँ करय लगलाह। बड़की दीदी हमरा हाथमे गंगाजल दऽ लालकक्काकेँ पियाबऽ लेल कहलक। हम हुनक गरदनि अपन बामा हाथमे लऽ दाहिना हाथसँ गंगाजल पिअयबाक उपक्रम कयलहुँ। प्राय: लाल कक्का सचेत रहथि-हमर ई उपक्रम आ पाठकजीक मन्त्रोच्चारसँ आँखि खोललनि आ मुस्कुराइत जल ग्रहण कऽ लेलनि। अकस्मात देखल तँ आँखिमे जे चमक रहनि से ज्योतिहीन भऽ गेलनि। विजय आचारी दौड़ैत ओहिठामसँ पड़ा गेलाह आ हमर तँ जेना सांसे रुकि गेल। दीदी कनैत हमरा ओतऽसँ फराक कऽ देलक। लालकक्का चलि गेल छलाह, एहीठामसँ माँ सेहो विदा भेलि छलि। ओहो एहीठाम आबि कऽ अपन जीवन-यात्राकेँ विराम देलनि। दोसर दिन नवभारत टाइम्समे छपल छल-**मैथिली साहित्य के शिखर से शेखर का अवसान**। ई शब्द हमरा बड़ अखरल-साहित्यसँ 'शेखर'क अवसान कोना होयत? हम 'शेखर'क अवसान नहि होमय देबैक! मैथिलीमे जेना होयत तेना 'शेखर'क राज कायम करब। ओही दिन मस्तिष्कमे विचारक उदय भेल-जँ पिताक बातमे दम हेतनि आ हमरामे पौरूष होयत तँ हमरासँ दू टा सन्तान जन्म लेत-राजशेखर आ शेखर प्रकाशन।

आइ लालकक्का नहि छथि हुनक इच्छा पूर नहि भेलनि मुदा हुनक वंशक दू टा संतान हुनक नामक ध्वज लऽ कऽ फहरा रहल छनि- राजाशेखर पौत्र आ शेखर प्रकाशन संस्था।

कोरोना लाकडाउन, 27.3.2020

अग्रेलखसँ भेंट

लाल गंजी आ उज्जर पैंट पहिरि पहिल दिन हम मिथिला मिहिर कार्यालय गेलहुँ। 18 मार्च 1981 ई० हमर विधिवत नोकरीक पहिल दिन छल। लालकक्का विभागीय प्रधान (सम्पादक) रहथि। हम एकटा आवेदन अपन ज्वाइनिंगक मादे लेखापाल कें दऽ देलियनि आ सम्पादकीय विभागमे आबि गेलहुँ। गोकुल बाबू आ भीमनाथ झाजीकें पहिनहिसँ चिन्हैत रहियनि। मुदा ओहिठाम मात्र भीम बाबू आ दिलीप कुमार सिंह झा टा रहथि। लालकक्का नहि आयल रहथि आ ने गोकुल बाबू। भीमनाथ बाबू हमरा बैसौलनि आ दिलीप जीसँ परिचय करौलनि।

लालकक्का अस्वस्थ भऽ गेल रहथि तें नहि आयल रहथि आ गोकुल बाबू कोनो दोसर कारणे। भीमबाबू कोनो किताबक प्रूफ पढ़ि रहल छलाह आ हम पूर्ण तन्मयतासँ देखि रहल छलहुँ। कतहु कोनो शब्दकें काटि देथिन आ कतहु ओकर शुद्ध रूप लीखि देथिन। हमरा ई कोनादन लागल। फेर लागय जे ई कोन विद्या छैक जे बादमे ई ठीक भऽ जयतैक। वास्तवमे भीमबाबूकें ओ काज करैत देखि हमरा लागल जे ओ शब्दक जादूगर छथि। जकरापर कलम चला देथिन ओ ठीक भऽ जयतैक। पहिल दिन हमर ओहिना बीति गेल। दोसर दिन फेर वैह दृश्य। भीमबाबू काटथि आ लिखथि। दिलीप जी कोनो कागजपर लिखल निबंधकें पढ़ि-पढ़ि कऽ ठीक कऽ रहल छलाह। ओही समय पारसजी, जे मिथिला मिहिरक फोरमैन छलाह, विभागमे आबि भीम बाबूसँ अग्रलेख मंगलथिन। भीमबाबू हमरा कहलनि जे अग्रलेख लीखि कऽ दियनु। हम अवाक् रही-ई अग्रलेख की होइत छैक? पारसजी अनुभवी लोक रहथि आ कार्यालयक राजनीति सेहो जनैत रहथि, बाजि उठलाह-ई बौआ की लिखथिन अहाँ दियौ ने लिखि कऽ। भीम बाबू आर बहुत किछु बजलाह जे हम नहि बुझलिऐक मुदा ई सभ सुनि दिलीपजी बहुत गंभीर भऽ गेलाह। थोड़ेक कालक बाद भीम बाबू अग्रलेख लीखि कऽ दऽ देलथिन। बादमे हमरा पता लागल जे भीम बाबू हमर बहालीकें अपन पदोन्नतिक बाधक बुझने छलाह तें ओहन व्यवहार कयने रहथि। हुनक लंगूर कविता सेहो ओही मानसिकतामे लिखल गेल जे हमरा आ लालकक्काकें बेधबाक काज कयलक। असलमे गोकुल बाबूकें भीमबाबूसँ टपा कऽ सहायक सम्पादक

बना देल गेल छलनि। भीमबाबू केँ भेलनि जे हमर बहालीक एवजमे लालकक्का ई अनसोहांत प्रोन्नति स्वीकार कयलथिन जखन कि वास्तविकता ई छल जे हमर बहाली आर्यावर्त लेल भेल छल मिथिला मिहिर लेल नहि। मुदा आर्यावर्तक स्थानीय राजनीति ई कऽ देलक। आ जहाँ धरि गोकुल बाबूक प्रोन्नतिक प्रश्न छल तँ ओ क्यो नहि रोकि सकैत छलाह, सम्पादक तँ नहिये, किएक तँ हुनक पैरवीकार कुमार साहेबक नाना रहथिन आ स्वयं गोकुल बाबू कुमार साहेबक मौसा। मुदा हमर बहाली लऽ भीमबाबू सभसँ बेसी क्रोधित भेला तँ लालकक्के पर आ तेँ कैक प्रकारक प्रतिक्रिया ओ ताहि दिन देल करथि। हम एहि सभसँ निरपेक्ष रही। मुदा एतवा भऽ गेल जे ओहि दिनुका वाद भीमनाथ बाबू जहिया धरि मिथिला मिहिरमे रहलाह 'मिहिर'क काजमे योगदान नहिये जकाँ देलनि। लालकक्का विभागक एहि स्थिति सँ स्वयं बहुत दु:खी रहथि। मुदा एक नोकरिहाराक जे विवशता होइत छैक ताही स्थितिसँ ग्रसित छलाह। आ प्राय: तेँ ओ लगभग पन्द्रह दिन धरि कार्यालय नहि अयलाह। एमहर गोकुल बाबू जे पहिने धोती कुर्ता पहिरैत छलाह से सफारी शूट पहीरि-साला 'मैं तो साहब बन गया'क नव रूपमे आफिस आबय लगलाह। ई सभ भीमबाबूकेँ असह्य भऽ गेलनि। भगवान एहि अपमान जनक स्थितिसँ बचयबा लेल हुनकर सुनि लेलथिन आ ओ मिथिला विश्वविद्यालयमे लेक्चररक पदपर योगदान देबऽ लेल, अपन कलमक जादूगरी देखयबा लेल मिथिला मिहिर छोड़ि दरभंगा चल गेलाह।

एहि बीच लालकक्का दू बेर जोरगर रूपें बीमार पड़लाह मुदा फेर ठीक भऽ गेलाह। मिथिला मिहिरसँ ओ 2 अक्टूबर 1982 मे सेवानिवृत भऽ गेलाह आ हम आ दिलीप गोकुल बाबूक नेतृत्वमे टेम्पो भऽ कऽ रहि गेलहुँ। टेम्पोक स्थिति अबैत-अबैत अग्रलेख की होइत छैक से तँ बुझि गेलिऐक जे स्व. हीरानन्द झा शास्त्री आ स्व. गजेन्द्र नारायण चौधरीक सम्पादकत्वमे अग्रलेख लिखबाक जे प्रशिक्षण भेटल ताहिसँ मिथिला मिहिरमे तँ कैक टा अग्रलेख लिखबे कयलहुँ जे समय-साल, पूर्वोतर मैथिल सहित दैनिक आर्यावर्तमे सेहो कैक बेर अग्रलेख (सम्पादकीय) लिखबाक अवसर भेटल। मुदा पहिल बेर जे घुड़की अग्रलेख लिखबा लेल भेटल से आइयो ओहिना स्मरण अछि। स्मरण आर सभ बात अछि जे कोना लोक दुधारी तरुआरि बनि अपन सुतारैत चलैत अछि, अनका छोपैत चलैत अछि। से जुआनियोमे नहि बुढ़ारियो धरि वैह छिच्छा।

28.3.2020 ●

सफलता ओ विफलताक कारण

हम अपन जीविका, नोकरी वा पेशा जे कही सम्पादन कार्यसँ प्रारंभ कयलहुँ। एहि क्रममे कतेक की देखल, कयल आ भोगल से एकटा फराक बिन्दु भऽ सकैछ मुदा एकटा बात जे देखबामे आयल से आइधरि अचंभित करैत अछि। ई अछि लेखकक प्रकार।

प्रारंभमे संपादनक कोनो ज्ञान नहि छल आ एहि संदर्भमे आदरणीय पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ओ डॉ. भीमनाथ झाक कहब-कोनो पत्र-पत्रिकाक काज करू, सम्पादक बनि जाउ, भने कोनो ज्ञान होअय वा नहि सटीक लगैत अछि। हमहूँ पहिल दिन 18 मार्च 1981 केँ 'मिथिला मिहिर'मे योगदान करिते उपसम्पादक भऽ गेलहुँ मुदा ओहि काजक कोनो ज्ञान नहि छल। रक्ष छल जे हम एप्रेटेन्टिस (प्रशिक्षु) रूपमे ओतऽ बहाल भेल रही। मुदा मैथिलीक दुर्भाग्य छैक जे मैथिलीमे सम्पादक बनाओल कमे जाइत छैक व्यक्ति स्वयं सम्पादक बनि अवतरित होइत अछि। एहि कोटिमे जँ नाम लेबय पड़य तँ एकसँ एक महामहोपाध्याय आबि जयताह जे ख्यात-प्रख्याते नहि मानक मानल जाइत छथि मुदा जँ सम्पादनक काजक मूल्यांकन कयल जायत तँ ओ प्रस्तुतकर्ता अथवा संकलनकर्ता टा मानल जयताह। एहिठाम हम किनको नाम नहि लेबनि एहि कारणे जे हम किनको न्यून नहि बुझैत छियनि मुदा जेँ कि मैथिली पत्रकारिता सम्पादन-कलाक अभावमे अपन तेवर नहि देखा सकल तेँ एहिठाम प्रश्नचिन्ह तँ ठाढ़ कइये सकैत छियनि।

सम्पादकीय विभागमे (लालकक्का) पिताजीक संग काज करबाक अवसर कमे भेटल मुदा पं. हीरानन्द शास्त्री आ श्री गजेन्द्र नारायण चौधरीक संग जखन काज करबाक अवसर भेटल तँ सम्पादकक दायित्व कर्त्तव्य आ अधिकारक ज्ञान भेल। सम्पादकेँ सदिखन तटस्थ, ज्ञान-पिपासु आ समय-अवसरकेँ चिन्हबाक क्षमता होयबाक चाही, से बोध भेल।

यैह बोध सम्पादकके उचित-अनुचितक ज्ञान, विभिन्न प्रकारक लेखकक-लेखन क्षमता ओ लक्ष्यकेँ बुझबाक क्षमता प्रदान करैत छैक।

यद्यपि मैथिलीक विवशता छैक जे ओकरा पत्र-पत्रिका निकालबा लेल लेखकक जतेक प्रकार छैक तकरापर निर्भर करय पड़ैछ मुदा जँ सम्पादकक अपन कलम मजगूत होइक तँ एहिसँ बहुत मात्रामे बचल जा सकैत छैक। सामान्यता मैथिलीमे जतेक पत्र निकलल वा निकलैछ तकर अंक प्रकाशनक कोनो ठोस योजना नहि होइछ आ कहियो काल जँ कोनो विषय-विशेष पर पत्र प्रकाशित भेल तँ ओ विशेषांक भऽ जाइछ। यैह कारण अछि जे मैथिलीमे विषय-विशेषज्ञक रूपमे कम लिखनिहार छथि। बेसी लेखक जे मोन भेलनि से लिखलनि आ ओ छपि गेल। पत्रकारिता एना नहि करैछ अपितु ओ पत्रमे जे किछु छपैछ से कोनो ने कोनो योजनेपर अवलंबित होइछ आ ओकर सभटा अंक विशेषांक होइछ। एकर मूल कारण ई अछि जे ओ अपन प्रत्येक अंकमे कोनो ने कोनो समसामयिक मुद्दाकेँ स्पर्श करैत चलैत अछि।

ई बात हम एहि कारणे कहि रहल छी जे एकर प्रयोग हम मिथिला मिहिर पाक्षिक आ मासिक 1987 सँ 1989 मे स्वयं कयने छी। एहि अवधि मे दुनू मिलाकऽ लगभग 20 टा अंक निकालल गेल छल जे कोनो ने कोनो विषय विशेषकेँ प्रस्तुत करैत छल। ताहि अवधिमे मिहिरमे हम, गोकुल बाबू आ दिलीप कुमार सिंह झा सम्पादकीय काज देखैत रही। ई अंक सभ देखला पर स्पष्ट भऽ सकैत अछि जे पत्रकारिताकेँ कोना सम्पादकीय दृष्टिसँ पोषित कयल जा सकैछ मुदा मूल्यांकन कयनिहार लोकनि मूल्यांकन करबा काल काज नहि देखैत छथि। अपितु खास व्यक्तिक कारणे ओहि पत्रक चर्च करैत छथि जे हुनक गोल अथवा गुटक रहैत छथि। प्रायः तेँ हिन्दीक एक वरिष्ठ पत्रकार, मैथिलीक लेखक साहित्य अकादमीक गोष्ठीमे पत्रकारिताक मूल्यांकन करैत काल उपलब्धि मिथिला मिहिरक गनौलथिन आ पत्रकारिताक श्रेय देसकोस आ विनोद कुमार झाक नाम लऽ कऽ लेलथिन। आ मिथिला मिहिर दैनिक बेरमे 'जँ ओकरा दैनिक मानि लेल जाय' कहि ओकर उपलब्धिकेँ न्यून कऽ देलथिन।

मैथिलीक एकटा खासियत रहलैक अछि जे एकर लेखक वर्ग 'आलराउन्डर' होइछ। ओ उपन्यासकार, कथाकार, कवि ओ गीतकार नाटककार, निबन्धकार, व्यंग्यकार, आलोचक आदि तँ होइते अछि संगहि संग प्रकाशक, वितरक आ विक्रेता सेहो भऽ जाइत अछि। एकर परिणाम एकेटा होइत छैक जे ओकरा क्रेता टा नहि भेटैत छैक जाहि लेल ओ बपहारि कटैत अछि, उकटा पुराण करैत अछि आ सम्पूर्ण मैथिल समाजकेँ एहि लेल दोषी मानैत अछि।

हम एहि सभ लेल ककरो दोषी नहि मानैत छी अपितु अपन टेटर अपने नहि देखि पबैत छी। मैथिलीमे जे नीक लेखन भेल अछि ओकरा क्यो नहि दबा पौलक आ जे उत्कृष्ट नहि छल ओ लाख प्रचार आ गोलबंदीक अछैत पानि नहि मांगि सकल। हास्य रचनाक रूपमे आइयो अल्हुआष्टकक नाम लेल जाइत अछि तँ व्यंग्यवाणक अद्भुत छटाक कारणे खट्टर कका सर्वश्रेष्ठ छथि। नवजागरणक संदेश दैत पृथ्वीपुत्र, भोरुकवा, नवतुरिया, पारो अजुको पीढ़ीकेँ आकृष्ट कऽ रहल अछि। ललका पाग, अगुरबान, मधुरमनिकेँ एक बेर पढ़लापर कहियो नहि बिसरल जा सकैछ। मुदा एहि बातकेँ ने पाखंडी युगक प्रतिनिधि रचनाकार बैद्यनाथ विमल मानबा लेल तैयार छथि आ ने कोनो ने कोनो सोंगरपर चतरयवला आलोचक/सम्पादक रमानन्द झा 'रमण'। हँ, सम्पादकीय दायित्वसँ जुड़ल श्री रामलोचन ठाकुर जे मिथिला दर्शन केँ कहियो भाषाक रूपमे एकरूपता नहि दऽ सकलाह, से अवश्ये एकटा सम्पादक रूपमे घोषणा करबामे कलकत्तेक योगदानकेँ मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक विकासक श्रेय लैत लिखैत अवश्य भेटि जयताह।

सम्पादकीय दायित्व पत्रे धरि सीमित नहि होइछ ओ भाषा, भाषा-भाषी ओहि समाजक नीक बेजाय धरि लऽ जयबाक हेतु प्रेरित करैत छैक। लेखकीय प्रकार भने सतरंगी हो सम्पादकीय दायित्व श्वेत-धवल, तटस्थ-निरपेक्ष, अनुशासित-कर्त्तव्यनिष्ठताक मांग करैत छैक।

हम आइ धरि जाहि पत्र सभक सम्पादन कयलहुँ अछि ताहिमे ने कोनो गुट परिलक्षित भेल आ ने कोनो वादक प्रभाव। हमर लेखन सेहो

विसंगतिक विरुद्ध चलैत रहल अछि खाहे ओ कोनो विषय वा कोनो व्यक्तिसँ संबंधित हो हमर लेखनपर कहियो कोनो व्यक्तिक प्रभाव नहि रहल। हमर विषयक अन्तर्गत जे क्यो अयलाह से शामिल भेलाह अछि प्रत्यक्ष रूपमे। यैह हमर सफलता आ विफलता दुनूक कारण बनैत रहल अछि। हम एहि रूपमे सफल छी कि असफल से फराक बात मुदा विसंगतिक खिलाफ हम सभ दिन ठाढ़े रहब श्रेयष्कर बुझैत रहलहुँ अछि।

29.3.2020 ●

सुखक सेहन्ता

सभ मनुष्य अपन-अपन सुखद भविष्य लेल सक्रिय रहैत अछि। नेनावस्थासँ लऽ कऽ बुढ़ारी धरि योजना दर योजना बनबैत सुखक सेहन्ता पोसने काज करैत चल जाइत अछि मुदा ईश्वरक चक्रचालि एहन जे ओकरा सन्तुष्टि नहि भेटैत छैक आ मकड़ा जकाँ एहि आशमे जाल बुनैत-बुनैत अन्ततः ओहिमे फंसि अपन जीवनक अंत कऽ लैत अछि। जँ मनुष्यमे संतुष्टि भाव रहितैक तँ अनेक बात जे घटित होइत छैक से नहि होइत।

मनुष्य स्वभावक सभसँ मायावी भाव स्वार्थ नहि रहितैक, जँ स्वार्थक अभाव रहितैक तँ आपसी संघर्ष नहि होइतैक। मुदा ईश्वर मनुष्यकेँ पेट दऽ स्वार्थी बना देलथिन आ ओकरा चलबऽवला दिमागमे एकटा बात भरि देलथिन जे ओकर बुद्धि आ अनकर धन बेसी छैक। एतहिसँ सुखक सेहन्ता पूरा करबा लेल मनुष्य सक्रिय भऽ उठैत अछि आ एहि लेल साम, दाम, दण्ड, भेद सभ नीतिक वशीभूत भऽ जाइत अछि।

ई बात नहि जे हमरा ई रोग नहि अछि। हमहूँ एहि रोगसँ ग्रसित छी तेँ भोरेसँ लऽ कऽ सुतबा काल धरि ओकरा अंगेजबा लेल परेशान रहैत छी। मुदा आफत ई अछि जे जतेक एकरा पयबाक हेतु कष्ट करैत छी ई ओतबे दूर भेल जाइत अछि। हँ, कखनो-कखनो खूब प्रसन्न भऽ जाइत छी जखन अपन तुलना अपनासँ नीचा स्तरक लोकसँ करैत छी। ओकर प्राप्ति आ अपन प्राप्तिसँ मिलान करैत छी। ओकर कष्ट आ अपन सुविधाकेँ देखैत छी। ओकर प्रयासक फल आ अपन प्रयासक फलकेँ चिखैत छी तँ संतुष्टि भावसँ भरि जाइत छी।

हमरा मजा तखन अबैत अछि जखन अपन संतुष्टि प्रक्रियामे आनक संतुष्टिक सेहो समावेश भऽ जाइत छैक। तेँ बरमहल कोशिश ई रहैत अछि जे हमर काज तँ होयबे करय संगहि संग हमरासँ जे जुड़ल लोक अछि सेहो सुखी रहय। तेँ हमरा जँ क्यो किछु कहैत अछि सहयोगक लेल तँ हम पहिने अपनाकेँ नपैत छी जे ओ काज हमरासँ भऽ सकैत अछि कि नहि। जँ ई बुझा जाइत अछि जे हम ई कऽ सकैत छी तँ फेर ओकरा सहयोग करबासँ पाछाँ नहि हटैत छी।

हमरा गलीमे एकटा रिक्शावला, शेखपुरा निवासी रहैत छल। नाम छलैक अनिल राम। ओ बहुत आज्ञाकारी आ विनम्र छल। हमरा रिक्शाक उपयोगक जतेक काज होइत छल, वैह करैत छल। किछु दिन बाद ओ हमरासँ ततेक हिलि-मिलि गेल जे हमर घरेलू काज सेहो कऽ दिअय। हमहूँ ओकरा किछु-किछु मदति कऽ दिऐक जाहिसँ ओ प्रसन्न रहय। एक दिन ओ हमरा निचैन देखि कहलक—सर, हमरा एकटा टेम्पू दिया दियऽ बैंकक माध्यमे। हम कहलिऐक जे ओ पता लगाबय, हम मदति कऽ देबैक। ओ बहुत चक्कर लगौलक मुदा ओकरा लोन देबऽ लेल बैंक तैयार नहि भेलैक। हमरा ओ किछु दिनमे ततेक तंग कयलक जे हारि कऽ हम अपने नामे लोन लऽ कऽ ऑटो दिया देलिऐक आ कहलिऐक जे तीन वर्षमे लोन चुका कऽ आटो अपना नामे करा लिहें। ओ खूब प्रसन्न भेल आ ओही नवके ऑटो चला ऑटो चलायब सिखलक। सभ कागज-पत्तर दुरूस्त कऽ देलिऐक जे कोनो कठिनता नहि होइक। ओ आब रिक्शा छोड़ि आटो चालक भऽ गेल।

ओकरा चारि टा बच्चा मिलाकऽ छौ गोटे परिवारमे छलै। बड़ कष्ट रहैक। आब ओ ऑटोसँ नीक कमाय लागल। बच्चा सभ अंग्रेजी स्कूलमे पढ़ऽ लगलै। दिन बदलि गेलै। हमर बेटीकेँ ऑफिस पहुँचबै जाहि हेतु ओकरा हम तीन हजार टाका मासी दिऐ। ओहीसँ लोन राशि चुकि जाइ। फेर दिन-राति ओ आटो चलबय, जखन मोन होइ। डेढ़ दू साल ठीक-ठाक चललै। बादमे ओ लोन चुकाबऽ मे आना-कानी करय, हम जे कहिऐक सेहो नहि मानय। परिवारक सदस्य लोकनिकेँ जेना मोन होइ उनटा-सुनटा कहि दनि। हम चुप्पे रही, कहुना लोन चुकि जाइ आ आटो लऽ घर जाय। एक बेर बैंक हमरा ततेक दवारलक लोन चुकबऽ लेल जे हम ओकरा फोने पर डँटलिऐक आ पाइ जमा करय कहलिऐक। ओ तमसा कऽ दलानपर ऑटो लगा देलक आ फेर नहि आयल। हमरा भेल जे रूसल अछि मुदा बात से नहि रहै। बात ई रहै जे ओकरा अपने आटो कीनि कऽ चलाबक हैसियत भऽ गेल रहै।

चारिमे दिन देखलिऐ जे ओ दोसर आटो चला रहल अछि भाड़ापर लऽ कऽ। अगिला सप्ताह पता लागल जे ओ साठि हजारमे एकटा ऑटो कीनि लेलक अछि। ई सभ देखि हमर घरक आ मोहल्लाक लोक ओकरा पकड़ि कऽ पीटबाक सलाह देलनि। मुदा हम किछु नहि करब से कहि सभक परामर्श ठोकरा देलियनि। ऑटो हमरा घरमे पड़ल छल आ ओ दोसर ऑटो चला रहल

छल। ओकरा हमरा प्रति ओ श्रद्धा, विनम्रता सभ समाप्त भऽ गेल छलै। हमरा देखि ओ स्वयं मुंह घुमा लिअय मुदा ओकर घरक लोक हमरा देखि एना ताकय जेना हम घृणित व्यक्ति होइ। किछु दिन ओ ऑटो चलौलक मुदा ओ नहि सम्हारि सकल अपनाकेँ। ऑटो बेचय पड़लैक, फेर किछु दिन खाना-खजाना नामसँ भोजनक टिफिन लोककेँ पहुँचौलक मुदा ओहो नहि चललै। डेढ़ सालक बाद पुनः ओ रिक्शा खीचय लागल आ वैह काज आब कऽ रहल अछि।

ओ एक बेर नीक दिन देखि कऽ फेरसँ ओही पुरने स्थितिसँ बदतर स्थितिमे चल गेल। ओ आटो सेहो हमर दरबज्जापर पड़ल रहल जावत हम ओकर बकियौता एक लाख दस हजार बैंककेँ नहि चुका देलिऐक। ओ अपन दू सालक 'नीक दिन'मे मात्र सत्तरि हजार चुकौलक मुदा ईश्वर हमरा ककरो 'नीक दिन' अनबा लेल ओहिसँ बेसी टाका चुकबऽ लेल विवश कऽ देलनि। हमर ओ विश्वस्त लोक एहि अवधिमे एको बेर मे हमरा टोकलक आ ने हम ओकरा टोकलिऐक। कतेक बादमे जाकऽ ओ ऑटो पचपन हजारमे बिकायल तँ बुझायल जे हमर नीक दिन आयल अछि। कारण अनिल लगभग दू लाखमे सँ मात्र सत्तरि हजार चुकौलक शेष हम। आइ ओकरा देखैत छिऐक तँ कष्ट होइत अछि। फेर ओ ओही स्थितिमे अछि जाहिमे ओ पूर्वमे छल।

सुखक सेहन्ता ओकरा विवश कऽ देने रहै जे ओ बिनु लोन चुकौने ऑटो मालिक बनि जाय। से ओ बनियो गेल मुदा ओ अपनाकेँ सम्हारि नहि सकल। हम तँ सहजहि सुख पयबाक प्रत्याशामे ओकरा ठाढ़ कयने रहिऐक मुदा से तँ नहिये भेटल जे बेटीक विवाहक बाद डेढ़ सालमे लाख टाकासँ बेसी बैंककेँ देबऽ पड़ल ताहिसँ डांड़ अवश्ये टुटि गेल। एहीठाम प्रत्यक्ष अनुभव भेल जे अपने सुख प्राप्त करब आ अनका सुख देबाक प्रयत्न करबामे की-की पापड़ बेलय पड़ैत छैक।

10.4.2020 ●

माता-पिता

पिताक बीजसँ माताक गर्भमे पालित-पोषित शिशु धरतीपर जन्म लैत अछि। सृष्टिक ई संगम सृजनक ओ द्वारि खोलैत अछि जःहिसँ सम्पूर्ण संसार चलैत अछि। एहिमे दुनू प्राणीक संयुक्त धर्म ओ कर्म फलित होइत अछि। पिताक कर्मक आधार आ माताक धर्मक सम्पूर्ण सद्‌गुण जीवनक आधार बनैत अछि। एहिमे के छोट के पैघ अन्तर करब दुसाध्य अछि। हमरा जनतबे दुनू प्राणी एक सिक्काक दू परत-'मातु पिता दुनू एक समाना' अर्थात महादेवक अर्धनारीश्वर स्वरूपा, देव तुल्य। ई एहि कारणे जे ईश्वरकेँ हम देखैत नहि छी मात्र कल्पना टा करैत छी जे ओ हमर जन्मदाता छथि, पालनकर्त्ता छथि मुदा दोसर दिस माता-पिताकेँ हम साक्षात् सोझांमे देखैत छी, जन्मदाता ओ पालनकर्त्ताक रूपमे देखैत पालित-पोषित होइत छी।

हम कैक बेर मंचसँ बाजल छी, लिखने छी जे माता-पिता हमर सर्जक, हमर पालक छथि, जनिका हम साक्षात् देखैत छियनि तेँ एहि पृथ्वीक प्रथम ईश्वर मानैत छियनि। हम अपन माता-पिता लेल कतबा की कऽ सकलहुँ तकर वर्णन नहि कऽ मात्र एतवे कहय चाहब जे आइ जे हमर स्वरूप, हमर कर्म, हमर धर्म अछि सभ हुनकेसँ ग्रहण कयल अछि आ हम आजन्म हुनक ऋणसँ उऋण नहि भऽ सकब। तेँ पूजाक प्रथम 'फूल' हुनके चढ़बै छियनि आ चढ़ाओल जयबाक चाही।

मुदा आजुक जे स्थिति अछि से भयावह अछि। एकटा पद्मविभूषित तबलावादकक विधवा हरिद्वारक विधवाश्रममे छथि, इंजीनियर-डाक्टर पुत्रक अछैत। कतेको गाम-घरमे जमीन-जाल जकाँ विभाजित छथि माता-पिता एकदोसरासँ। कतेको माता, कतेको पिता अवहेलना, प्रताड़नाक शिकार भऽ काल कवलित होइत छथि। हम बहुत भागमंत छी जे पिता अन्तिम सांस हमर बांहिमे लेलनि, माताक सेवा बाल्यकालसँ अन्तिम यात्रा धरि करबाक अवसर भेटल। आइयो हुनक आशीर्वादसँ अभिभूत छी, रोमांचित होइत रहैत छी।

8.00 प्रातः, कोरोना लॉकडाउन-4, 26.05.2020 •

स्वाभिमान

स्वाभिमान कोनो व्यक्तिक जीवनक महत्वपूर्ण कारक बनि ओकर परिचितिकेँ कायम करैत छैक। मुदा संगहि ईहो ध्यान रखबाक थिक जे ई बढ़ि कऽ अहंकारमे नहि परिवर्तित भऽ जाय। जँ अहंकारक रूप लऽ लैत अछि तँ स्वाभिमान सन मनोबलकेँ बढ़बऽवला तत्व खंडित भऽ जाइत अछि। तेँ स्वाभिमानक संग-संग अहंकारी प्रवृतिकेँ दूर फेकैत जयबाक चाही। ई ध्यान रखबाक चाही जे स्वाभिमानक आगाँ दुश्मनो झुकि जाइत अछि, अहंकार अनका संग-संग स्वयंकेँ सुड्डाह कऽ दैत अछि। स्वाभिमानी व्यक्तिकेँ अपन क्षमता, अपन औकात आ अपन बुद्धि कौशलक आधार पर आगाँ बढ़बाक चाही तखने ओ स्वाभिमानक रक्षा कऽ सकैत अछि अन्यथा नहि।

हमर जीवनमे स्वाभिमानक भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रहल अछि आ अपन सामर्थ आ ओकातिकेँ नपैत ओकर रक्षा करैत रहलहुँ अछि। मिथिला मिहिर एवं आर्यावर्तक सम्पादकीय विभागमे काज करैत अनेक एहन अवसर आयल जाहिमे हमरा अपमानित अथवा संघर्ष करबाक हेतु उकसाओल गेल मुदा सभ दिन अपन कार्यक बलें, क्षमताक बलें, धैर्यक बलें सामना करैत कोनो सीटपर अपनाकेँ न्यून नहि होमऽ देलहुँ। संग काज कयनिहार पदाधिकारी, सहयोगी आ मातहत सभक प्रयास निष्फल होइत रहलनि। तहिना प्रकाशन आ पोथी आपूर्तिक व्यवसायमे कमीशनपर काज करबाक लोभ-लालच देल गेल, नहि माननलापर बारल गेल मुदा हमर स्वाभिमान हमर रक्षा करैत रहल आ हम टिकल रहि शेखर प्रकाशनकेँ मैथिली जगतमे एकटा सम्माननीय स्थान दिया सकलहुँ अछि। यद्यपि एहि रक्षा कवचक रक्षाक कारणे हमर परिवार आर्थिक दंश भोगैत रहल मुदा कहियो हमरा स्वाभिमान त्यागबाक हेतु विवश नहि कयलक।

हम के छी, हमर परिचिति की अछि से एहि वयसमे हमरा स्पष्ट करबाक इच्छा नहि अछि। लोक जे बूझय, वैह सही, वैह सत्य।

दिन 12 बजे, कोरोना लॉकडाउन-4, 26.05.2020 •

अधिकार

मनुष्यक विकास हेतु समाज द्वारा प्रत्येक व्यक्तिकें अधिकार देल गेल अछि जाहिसँ कि ओ स्वतंत्रतापूर्वक अपन व्यक्तित्वक विकास करैत जीवन निर्वाह कऽ सकय। मुदा एहि अधिकारसँ ककरो आहत वा अहित नहि कयल जा सकय तेँ व्यक्तिक कर्त्तव्य सेहो निर्धारित कयल गेल अछि जकर निर्वहन कयल जायत से अपेक्षा कयल जाइछ। किछु दशक पूर्व धरि अधिकार आ कर्त्तव्यमे सामंजस्य रहल आ संयुक्त परिवारक तत्वावधानमे दुनूक रक्षा होइत रहल मुदा एकल परिवारक चलनक विकसित होइते अधिकार प्रबल भऽ गेल आ कर्त्तव्य तर पड़ि गेल अछि। वर्तमान समयमे तँ अधिकार एक एहन ब्रह्मास्त्र बनि गेल अछि जाहि बलें लोक कोनो व्यक्तिकें की परिवार, समाज, सरकार, कानूनकें चुनौती देबामे धखाइत नहि अछि आ अपन बात, अपन तर्ककें सर्वश्रेष्ठ मानि साम, दाम, दंड, भेदक नीतिकें अपन हाथमे लऽ लैत अछि। परिणाम, ईर्ष्या द्वेष, कलह, संघर्ष, घृणा, क्रूरता आदिक प्रसार होइत अछि। अपन योगदान, कर्तव्य-निष्ठा नहि देखि मात्र आघात-प्रतिघातकें साधन मानि निराकरण ताकल जाइत अछि।

हमर पूर्वपीढ़ी अपन योगदान, समर्पण, निष्ठाकें कर्त्तव्य मानैत, अधिकारकें गौण बुझैत जीवन निर्वाहकें प्रश्रय देलनि तेँ घर-परिवारकें डेबैत समाजमे अपन ऊँच्च स्थान कायम कयलनि। हमरा लोकनि अधिकारक प्रति बेस साकांक्ष छी तेँ कष्टमे छी, जीवन संघर्षपूर्ण अछि। व्यक्तिगत रूपें हम अपन अधिकारसँ बेसी कर्त्तव्यकें श्रेष्ठ मानलहुँ अछि तेँ प्राय: आजुक समाजमे अपनाकें 'अनफिट' पबैत छी आ बरमहल असहज स्थितिमे आबि जाइत छी। अधिकार मांगल नहि जाइछ, छीनल नहि जाइछ, कर्त्तव्यक संग सामंजस्य रखैत उपयोग कयल जाइछ से मानैत छी। जतऽ अधिकार आ कर्त्तव्यमे टकराहटि बुझाइत अछि ततऽ कर्त्तव्यकें तकैत बुझैत कात भऽ जाइत रहलहुँ अछि। एहिसँ ने तँ हमर कर्त्तव्यक लोप होइछ आ ने अधिकारेक हनन अपितु शान्तिक मार्ग भेटैत अछि।

5.30 प्रात:, कोरोना लॉकडाउन-4, 26.05.2020 •

अनुशासन

अनुशासन मनुष्य जीवनकेँ सुचारू एवं नियमित चलयबाक आधार होइछ। अनुशासनेसँ देस दुनियां चलैत अछि। घर-परिवार, कल-कारखाना, कार्यालय, व्यापार, यातायात, शिक्षा आदि कार्यकलाप अनुशासनेसँ आबद्ध रहैछ। हँ, एहि लेल सजग कानूनक आवरण देल जाइछ जाहिसँ कि एहिमे कतहु व्यतिरेक-बाधा होइ तँ ओकर पालन करा कायम कयल जा सकय। बहुधा एकर पालन होइछ मुदा एकर उल्लंघन नहि होइछ से बात नहि। तथापि एकर पालन अवश्य कराओल जाइछ। जे समाज एकर पालन करैछ से उन्नत, विकसित ओ सुखमय रहैछ आ जतऽ एहिमे व्यवधान उत्पन्न होइत अछि ओतऽ अराजकता, अशान्ति आ संघर्ष-कलहक माहौल व्याप्त रहैछ आ लोक अपनाकेँ असुरक्षित बुझैत अछि।

युरोप सहित अमेरिका आदि देशमे अनुशासनकेँ महत्वपूर्ण मानि ओकर अनुपालन होइछ तेँ ओतऽ सुख-समृद्धिक साम्राज्य अछि ओहीठाम एशिया एवं अन्य महादेशमे एकर अवहेलना होइछ आ तेँ एहिठाम दुःख दारिद्रय एवं अशान्ति व्याप्त रहैत अछि। हरदम कोनो ने कोनो कारणे असहज स्थिति बनल रहैत अछि। भारतमे सेहो अनुशासन हेतु अनेक नियम उपनियम अछि तथापि हरदम कोनो ने कारणे असहज स्थिति बनल रहैत अछि।

हम अपन जीवनमे अनुशासनकेँ अत्यधिक महत्व दैत छी आ तेँ प्रयास रहैछ जे नागरिकोचित एवं मानवोचित व्यवहारमे सरल-सहज बनल रही। विद्यालय-महाविद्यालयमे जे किछु सिखलहुँ नोकरी-व्यवसायसँ जे अर्जन एवं अनुभव प्राप्त कयलहुँ, अथवा नीक-बेजायक जे ज्ञान अद्यावधि अर्जित कयलहुँ अछि से अनुशासनक बलें। मुदा जेना-जेना वार्धक्य घेरने जा रहल अछि तेना-तेना जे दृश्य देखैत छी ताहिसँ भयभीत छी। अनुशासन कतऽ हेरा गेल अछि तकरा तकबाक प्रयास कऽ रहल छी।

5. बजे संध्या, कोरोना लॉकडाउन-4, 23.05.2020 •

अवसर

मनुष्यक जीवनमे अवसरक बहुत महत्व अछि: सही अवसर पर सही काज करब प्रगतिमे सहायक होइत छैक। तेँ मनुष्यकेँ चेतबैत कहल गेल अछि–पन पछतैहें अवसर बीते।' सभ मनुष्य चाहे ओ विद्यार्थी अवस्थामे हो, नोकरीक तलाशमे हो वा व्यापारी, प्रशासन, कार्यालय, सरकार आदि सही समयपर अवसरक लाभ उठा काज करबाक प्रयास करैत अछि। हँ, कैक बेर ईहो समस्या उत्पन्न होइछ जे अवसरक चयन कयल जाइत अछि मुदा परिस्थिति ओकरा प्रतिकूल बना दैत छैक। तेँ कि ओहिसँ मुँह मोड़ि लेबाक चाही वा ओकरा छोड़ि देल जयबाक चाही। किन्हुँ नहि, 'सफलता' चारि अक्षरक होइछ, ओहिमे जँ एकटा अक्षर 'अ' जुड़ि गेल तँ की हारि मानि लेब–नहि। आर जोर लगाकऽ नव अवसरक ताकमे रहि सचेष्ट भऽ जयबाक चाही। पछिला प्रतिकूलताकेँ अनुकूल करैत काजमे लागि जयबाक चाही खास कऽ युवा वर्गकेँ जकरामे असीम उत्साह, अत्यधिक उर्जा ओ क्षमता विद्यमान रहैत छैक।

खास कऽ हमरे जीवनमे अनेक नीक अवसर आयल जकर लाभ हम लेबाक चेष्टा कयलहुँ भने कतबो प्रतिकूल परिस्थिति रहल। जतेक सफल होयबाक चाहैत छल से नहि भेल मुदा की हमर डेग थकमकायल नहि। प्रत्येक बेरक त्रुटिकेँ ठीक करैत डेगाडेगी दैत रहलहुँ आ अपना संगक आश्रितकेँ लऽ कऽ आगाँ बढ़ैत रहलहुँ। आइ हमरा चारिटा संतान अछि चारू पढ़ल–लिखल आ हमरासँ बेसी सक्षम ओ प्रखर बुद्धिक अछि। पत्नी संतोषी माता ओ अन्नपूर्णाक प्रतिरूप छथि। हँ, कतहु अभाव, कतहु कष्ट आ महत्वाकांक्षी कल्पना साकार नहि भऽ सकल। आ आब हम ओहि अवस्थामे छी जे अवसरक लाभो नहि उठा सकैत छी। तकर माने की हमर अवसर चुकि गेल। नहि हम ई नहि मानैत छी, जे हम नहि कऽ सकलहुँ से अवसर पाबि अगिला खाढ़ी अवश्य करत से पूर्ण विश्वास अछि। ओ अवसरक लाभ उठाओत आ आगाँ बढ़वे करत!

4. बजे दिन, कोरोना लॉकडाउन–4, 24.05.2020 •

शिक्षा

शिक्षा ओ आलोक अछि, प्रकाश पुञ्ज अछि जाहिसँ मानव मस्तिष्क चमकैत अछि, दमकैत अछि, ओकर बौद्धिकता महमहा उठैत अछि। शिक्षेक कृपासँ ओ अपनाकेँ योग्य बनबैत अछि आ ओकर व्यक्तित्वक विकास प्रस्फुटित होइत चल जाइत छैक। अक्षरक ज्ञान ओकरा साक्षर बनबैत छैक तँ ओकर शब्दार्थ ओकर बुद्धि बलकेँ फरीच्छ करैत छैक। जे एहि कुंडमे जतेक डुबकी लगबैत अछि ओतेक बेसी प्रखरता, विद्वता प्राप्त कऽ अपनाकेँ समाजो-पयोगी बनबैत जाइत अछि।

भारतमे भोजन, वस्त्र आ आवासक बाद मनुष्यक विकासक हेतु शिक्षेकेँ महत्व देल जाइछ। कारण, पहिल सोपानक रूपमे भोजनसँ स्वास्थ्यक ज्ञान, वस्त्रसँ स्वच्छताक ज्ञान आ आवाससँ रहन-सहन, आचार-विचारक ज्ञान विकसित होइत छैक। कहल जाइत छैक जे मनुष्य जीवनक पहिल पाठशाला परिवार होइछ जतऽ ओ प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करैत अछि। खेल-खेलमे उठैत-बैसैत, हँसैत-कनैत बहुत बात सिखैत अछि जकरा आइ काल्हि परिवारसँ हटा कऽ 'प्ले स्कूल'मे परिवर्तित कऽ देल गेल अछि। व्यक्ति क्रमिक रूपें विद्यालय-महाविद्यालयक अतिरिक्त अनेक संस्थामे शिक्षापूर्ण कऽ रोजगार हेतु तैयार होइत अछि। तथापि शिक्षाक ई क्रम जीवन भरि चलैत रहैत अछि।

हम अपन शिक्षा, अपन संतानक शिक्षाक चर्च अन्यत्र कऽ चुकल छी। एम्हर एक डेढ़-दशकसँ मैथिलीक शिक्षा कोना उन्नत्त होमय ताहि दिशामे अपनाकेँ ठाढ़ करबाक प्रयास कयलहुँ। विद्यार्थी, परीक्षार्थी, प्रतियोगी परीक्षाक मेधावी परीक्षार्थी कोना सफलता प्राप्त करथि ताहि लेल छोट-छिन सीढ़ी, पुल बनबाक चेष्टा करैत रहलहुँ। एकर आकलन अपने कोना करू। स्वयं एखन धरि शिक्षाक विद्यार्थी बनले छी। कतबो मंथन करैत छी जतऽ ओ आलोक, ओ प्रकाश पुञ्ज भेटि सकय जकर चर्च प्रारम्भमे कयलहुँ से अद्यावधि नहि भेटि सकल अछि।

6 बजे प्रातः, कोरोना लॉकडाउन-4, 25.05.2020 •

नियंत्रण

मनुष्य जीवनमे नियंत्रण एकटा एहन आधार होइछ जाहिसँ चरित्र निर्माण ओ जीवन शैली विकसित होइत अछि। जीवनक लक्ष्य प्राप्त करब आ ओहि लेल यत्न करब सहज-सरल भऽ पबैत छैक। जतेक लोक सफल भेलाह अछि हुनक जीवनक अध्ययन कयलाक पश्चात् यैह तत्व अभरि कऽ सोझां अबैत अछि। हँ, एहिठाम ई प्रश्न कयल जा सकैत अछि जे एकर आवश्यक तत्व की सभ अछि! हमरा जनैत एकाग्रता पूर्वक कमसँ कम सुविधा प्राप्त करबाक इच्छाशक्ति, वाणीमे संयम, आहार, विहार ओ व्यवहारमे सजग रहबाक कट्टरता, इर्ष्या-द्वेष, घृणा आ धनसंचयसँ परहेज, अनका कष्ट नहि देबाक निश्चय, यथा संभव सहयोग, समन्वयक चेष्टा, क्रोध, अहंकार, लोभक वर्जना आदि प्रमुख कारक भऽ सकैछ। अधिकारसँ बेसी कर्त्तव्य ओ दायित्वक अनुपालनक प्रति सचेष्ट रहब आवश्यक अछि।

हम अपन जीवनमे कतेक नियंत्रित रहि सकलहुँ तकर मूल्यांकन कोना कऽ सकैत छी मुदा एतवा कहि सकैत छी जे गृहस्थ जीवनमे रहि जे किछु कऽ सकलहुँ तकर आधार प्राय: नियंत्रणे बुझना जाइछ। नशामुक्त जीवनशैली आइ धरि अछि, जे काज करैत छी से पूर्ण निष्ठाक संग, कहियो पढ़ाइमे टॉप अथवा फर्स्ट नहि कयलहुँ मुदा जतबे पढ़लहुँ ताहिपर अधिकार अछि, ककरो संग कलह अथवा द्वेष करबाक प्रवृति नहि अछि, धन प्राप्ति लेल नौ-छौ करबाक प्रवृति नहि अछि, घर-परिवार, पड़ोस-समाजक अहित करबाक चेष्टा नहि कयलहुँ, नागरिक दायित्व पालन करब अभिष्ट अछि, अनका दु:ख दऽ सुविधा प्राप्त करबाक अभिलाषा नहि होइछ, उचित-अनुचितक ज्ञान रखबाक यत्न करैत छी, अनुचितक प्रति क्रोध उत्पन्न होइछ जाहिमे अहंकार नहि होइछ, भोजन ओ जीवन-स्तरमे सादगी, ककरो मोनक भाव बुझि क्रियाशील होइ तथापि ज्ञात भेलापर समन्वय चाहैत, समाधानक चेष्टा करैत छी। तथापि स्वजन, परिजनक नजरिमे हम असफल छी। हम प्रसन्न छी जे हमर सफल होयबाक प्रयासमे मात्र एकटा अक्षर 'अ' टा जुड़ि सकल अछि, पराजित नहि भेलहुँ अछि। नियंत्रणमे रहबाक प्रयास जारी अछि। देखाचाही, एहि जीवनमे से भऽ सकैत अछि वा नहि!

प्रात:, आठ बजे, कोरोना लॉकडाउन-4, 12 मइ, 2020 •

निर्माण

पृथ्वीपर निर्माण कार्य दू तरहें होइत अछि। एकटा प्राकृतिक नियमक अनुरूप होइत रहैत अछि आ दोसर मनुष्य द्वारा आवश्यकतानुसार सतत नव-नव वस्तु सृजित होइत रहैत अछि। एहिखन कोरोना वायरस आबि कऽ समस्त विश्वकेँ विचलित-भयभीत कऽ देने अछि मुदा मनुष्य, जे हारि मानयवला जीव नहि अछि एहि रोगसँ बचवा लेल विभिन्न प्रकारक खोज कऽ औषधि निर्माणक काजमे निरंतर क्रियाशील अछि। आइ धरि अनेक प्रकारक अनुसंधान कऽ सम्पूर्ण मानव जगतकेँ अचंभित कयने अछि।

मनुष्यक स्वभाव होइछ निर्माण करब। पुरुष ओहन काज करैछ जे असंभव होइछ। नारी ओहन काज करैछ जे प्राकृतिक गुणसँ परिपूर्ण हो। प्रायः तेँ नारीक तुलना प्रकृतिसँ आ पुरुषक महादेवसँ कयल जाइछ। एहि दुनूक संगमसँ किछु असंभव नहि। सृष्टि आ पालनकर्ता यैह दुनू छथि।

विश्वक करोड़ो महापुरुष भेलाह अछि जे असंख्य वस्तुक निर्माण कऽ अमर भऽ गेलाह। प्रायः तेँ सभ क्षेत्रमे अविस्मरणीय काज कऽ अपन स्थान ऊँच करबा लेल अनेक लोक प्रयत्नशील रहैत अयलाह अछि। ई प्रक्रिया सतत चलैत रहल अछि, चलैत रहत। मानव जगत एही निर्माण प्रक्रिया आ तकर समस्या सभसँ जुझैत जीवन-यापन करैत अछि।

हम एहि निर्माण प्रक्रियामे कतहु स्थान नहि बना सकलहुँ कारण हमरामे ने प्रखरता अछि, ने क्षमता अछि आ ने ओ स्थिति अनुकूल रहल जे किछु कऽ सकितहुँ। ओतवे कऽ सकलहुँ जतेक एकटा जीव अपन अस्तित्व टा बचौने रहबा लेल करैत अछि। एहि स्थितिक लेल ने कोनो दुःख अछि ने पीड़ा।

शंकराचार्य कहनो छथि-

'न दुःखं न सुखं
न पापं न पुण्यं
शिवोऽह शिवोऽहं'

कोरोना लॉकडाउन IV, 4 बजे अपराह्न, 20.5.2020 •

विनाश

विनाशक अर्थ निर्माणक ठीक विपरीत होइछ। जेना निर्माण प्रक्रिया दू तरहें संचालित होइछ तहिना विनाश सेहो अपन दू रूप देखबैछ-प्राकृतिक एवं मानवजनित। प्राकृतिक रूपमे बाढ़ि, रौदी, महामारी, भूकंप, चक्रवात, हिमपात, भूस्खलन आदि होइछ जाहिमे जन-धन सहित बहुतो प्रकारक बर्बादी होइछ। मुदा मानवजनित विनाश भूल, भ्रम, त्रुटि, अज्ञानता, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष होइछ। मानव जनित विनाशमे क्रोध, कलह, दुर्भावना, प्रतिशोधसँ उत्पन्न विनाशक रूप बेस घृणात्मक होइछ। एहिमे एक पक्ष नहि दुनू पक्षक अहित होइछ, जाहिमे फलाफल शून्यक अतिरिक्त किछु नहि भेटैछ अपितु विनाश नहि सर्वनाश भऽ जाइछ।

उद्योग करब जीवनधाराकेँ ओहिना स्वच्छ बनौने रखैछ जेना नदीकेँ बनौने रखैछ मुदा जतऽ पानि ठमकि जाइछ, गतिहीन भऽ जाइछ ओ सड़ि जाइछ, दुर्गन्धिमय भऽ शनैः शनैः अपन अस्तित्व समाप्त कऽ लैछ। मनुष्यो जीवनक यैह चक्र अछि-ठमकल, बैसल, क्रियाहीन जीवन नकारात्मक सोचक कारण कलह, ईर्ष्या-द्वेष, मिथ्याअहंकारक कारणे कुपथ दिस चलि अपन सभ किछु नष्ट कऽ लैछ। रावणक अहंकार अपना संगहि लंकाकेँ नष्ट करबा लेलक, अज्ञानता, इर्ष्या-द्वेष, अहंकार, सामंजस्यक अभाव, निष्क्रियता राज दरभंगा सन प्रतापी साम्राज्यकेँ रसातलमे मिला देलक। सामान्य जनमे जँ ई सभ दुर्गुण घर कऽ लिअय तँ विनाशक कोन रूप सोझां आयत से सहजे सोचल जा सकैछ।

अपना ओतऽ एकटा कहबी छैक 'लिखऽ अबैत अछि तँ नहि, मिटबऽ अबैत अछि तऽ दुनू हाथें'। ठीके मानवजनित विनाशकेँ एही रूपें लेल जा सकैछ। हम अपन जीवनमे कोनो वस्तुकेँ ओकर अंतिम अवस्था धरि कोना उपयोगी बनल रहय तकर चेष्टा करैत छी, एकटा अन्नक बर्बादी, एकटा पाइक अनर्गल खर्च अधलाह बुझैत छी, ककरो वस्तु, कोनो प्रकारक उर्जाक बर्बादी नहि होअय तकर चेष्टा करैत छी। सत्य पूछी तँ नाश अथवा विनाशक रूप हमरा सोझां हमरा द्वारा नहिं आबय तकर चेष्टामे लागल रहैत छी तथापि विनाशक रूप विभिन्न प्रकारें सोझांमे अबैत रहैत अछि, की एहि जीवनमे एहिसँ मुक्ति भेटि सकैछ?

10.48 पूर्वाह्न, कोरोना लॉकडाउन- 4; 21.5.2020 •

आस्था

आस्था मनुष्यमे विद्यमान रहयवला एकटा एहन भाव अछि जे ओकरा एकाग्र होयबामे मदति करैत छैक। जकरा लोक देखैत नहि अछि मुदा ओही अदृश्य शक्तिक प्रति अत्यधिक आकर्षित होइछ। प्रत्येक संकट, विषम परिस्थितिमे ओकरा स्मरण कऽ शक्ति संचारक आगमन होयत से विश्वास रखैत अछि। मुदा जखन सामूहिक रूपें प्राणपर आफत अबैत अछि तँ लोक ओहि आस्थाक डोर छोड़ि पहिने अपन-अपन प्राण बचयबाक लेल विभिन्न प्रकारक व्योंतमे लागि जाइत अछि। कोरोना वायरसक भय एहेन सन स्थिति उत्पन्न कऽ देलक अछि। आश्चर्य, प्राणक भयक कारणे सभ-सम्प्रदायक आस्था सरकारी कानूनसँ न्यून भऽ अपन-अपन द्वारि बन्द कऽ मताबलंबीकेँ घरमे रहबा लेल विवश कऽ देलक अछि।

इस्लामक तीर्थस्थल मक्का-मदीना बंद अछि, ईसाइक वेटिकन सीटी सुन्न मसान बनल अछि। हिन्दूक प्रायः प्रत्येक मंदिर आ आस्थाक केन्द्र बन्द अछि, सिख सम्प्रदायक प्रत्येक गुरुद्वारा श्रीहीन भेल अछि। एहन लगैत अछि जे विश्वक आस्थाक समस्तक कारबार, प्रार्थना-इबादत, अनुष्ठान पर ब्रेक लागि गेल अछि। थमि गेल अछि। सरकारक एक हरकारापर दीप जरैत अछि, थाड़ी-घण्टी बजैत अछि, नाक-मुहपर जाबी लगैत अछि, लोक एक दोसरासँ भगैत अछि, पूजा-पाठवला जगहकेँ दुर्गन्धिसँ युक्त करयवला प्राणी अपन प्राणरक्षा लेल सेनेटाइज कऽ रहल अछि। एते धरि जे अतिबली 'अंजनी पुत्र महाबलदायी' हनुमानजीकेँ सेहो सेनेटाइज कयल जा रहल छनि। एहन सन बुझाइत अछि जे प्राणरक्षा अभियान आस्थाकेँ मृत कऽ देलक अछि।

की आस्था मरि जायत। की आस्थाक रूपमे परिवर्तन होयत! की आस्थाक प्रति कट्टरतामे कमी आओत! की आगाँ विभिन्न सम्प्रदायमे आस्थाक टकराहटि कम होयत। कोरोना आगाँ जे करय, आस्थाकेँ घर-घर पसारि दिअय वा समेटि कऽ एकठाम कऽ दिअय एखन तँ आस्था एकेठाम केन्द्रित अछि-कहुना हमर प्राण बाँचि जाय बादमे सोचल जायत जे कतय माथ झुकाबी।

10.30 बजे राति, कोरोना लॉकडाउन-3; 18.4.2020 •

काज/कार्य

काज एकटा एहन प्रक्रिया थिक जाहिसँ मनुष्य अपनाकेँ सक्रिय रखैत अछि। अपन शरीर, बुद्धि, विद्याकेँ विकसित करैत घर-परिवारकेँ, समाजकेँ अपन योगदान दैत अपन एकटा फराक उपयोगी स्थान बनबैत अछि। क्यो एहन मनुष्य नहि होइछ जे काज नहि करैछ। सभ अपना बुद्धि विवेक, कौशलसँ सदति क्रियाशील रहैछ। जँ क्यो कहैछ जे हम बेकार छी, बैसारी चलि रहल अछि तँ ओ अपनाकेँ ने ठकैत अछि जे अनको ई कहि ठकबाक प्रयास करैत अछि। एहि कोरोना लॉकडाउनमे दू गोटे जे हमर मुहल्लामे रहैत अछि तकर मनोबल देखि तँ यैह कहल जा सकैछ। एकटा रिक्शावाला विजय आ दोसर कपड़ा आयरन करयवाला शंभूक काज रूकि गेलैक तँ ओ दुनू तरकारी बेचि अपन परिवारकेँ डेबि रहल अछि। कहबीयो छैक 'जहाँ चाह वहाँ राह।'

काजक दोसर रूप रोजगारक होइछ। एहिमे ततेक प्रकार छैक जे बेसी लोक सटीक चयन अपन क्षमतानुसार नहि कऽ पबैछ। हम स्वयं अपन जीवन संघर्षमे, पत्रकारिता, प्रेस संचालन, विज्ञापन एजेन्ट, लेखक, पोथी प्रकाशक आ बिक्रेताक रोजगारक बले अपनाकेँ चलायमान रखे छी। जे साधन, क्षमता, पारिवारिक सक्षमता रहल आ जे परिस्थिति अबैत गेल, काज करैत गेलहुँ। सरकारी नोकरी की बाबू भैया बनऽवला नोकरी करबाक जिद्द नहि छल, अपन परिवार, अपन ओकातकेँ देखैत काज करैत गेलहुँ, दिन खेपैत गेलहुँ।'

काज कोनो खराप नहि होइत छैक, भने स्तरमे अन्तर अबैत छैक। जँ विशेषता आनि अपन काज करी तँ कतहु सफलता भेटि सकैछ। जहाँ धरि टाका-पैसा आ सुख सुविधाक प्रश्न छैक तँ छोटो काजसँ शुरु कऽ क्यो शीर्षपर जा सकैछ। उदाहरणमे श्री नरेन्द्र मोदी आ महेन्द्र सिंह धोनीकेँ देखल जा सकैछ।

हँ, जिनगीक लड़ाई लड़बा लेल मनुष्यमे व्यक्तिगत लुरिक अभाव नहि होयबाक चाही तेँ जतऽ हम अपन कार्यक्षेत्र बनौलहुँ सभ प्रकारक काज

सीखलहुँ चाहे पत्रकारिताक टेबुल परहक कोनो प्रकारक काज वा प्रेसक कोनो तरहक काज, सभ कयलहुँ। पोथी बिक्रेताक रूपमे सेहो ओकर सभ काज अपने करैत छी तेँ टिकल छी।

एकर मतलब ई नहि जे घरेलू काजक लेल अनका भरोसे रहैत छी-रोटी-तरकारी आ भात-दालि बनयबाक बात हो, चौका-वर्तनसँ झाड़ू पोछा लगयबाक काज करबाक हो, कपड़ा साफ करबाक वा पूआ-पूड़ी बना अतिथिक सत्कार करबाक बात कनेको आलस नहि होइछ। जाहि हाथें लिखैत छी ताहि हाथेँ कूड़ा सेहो साफ कहैत छी, बाथरूम सेहो साफ करैत छी। आश्चर्य अछि जे ने हाथे खिआइत अछि आ ने देहे टूटि-फाटि गेल। काज-काज होइत छैक से करबेक चाही। जे 'परमुंडे फलाहार' पर रहैत अछि तकरे काज नहि भेटैत छैक आ काज करबासँ देह गन्दा होइत छैक। हम जे बेकार छी आ ने परावलंबी तखन कोना मानू जे काज नहि भेटैत छैक। काज तँ हमरा-अहाँक आगाँ पाछाँ छिड़िआयल अछि से देखबामे आओत तखन ने भेटत?

4 बजे बेरिया, कोरोना लॉकडाउन- 15.04.2020 •

परीक्षा

परीक्षाक अर्थ होइछ कोनो पाठ्यक्रमक अन्तर्गत अथवा नोकरी पयबाक हेतु ओहिमे शामिल भऽ सफल होयब। एहिमे मूलतः परीक्षा हेतु विषय-वस्तु पाठ्यक्रमक हिसाबे निर्धारित होइत अछि आ ओहिसँ सम्बन्धित अनका द्वारा पूछल प्रश्नक उत्तर दऽ सफलता पयबाक प्रयास होइत अछि। एहू परीक्षामे कतेक सफल होइत अछि आ कतेक असफल। कारण प्रश्न अनका द्वारा पूछल जाइछ जे परीक्षार्थीकेँ नहि बूझल रहैछ। मुदा आब तँ एहू परीक्षाक सेटिंग-गेटिंगक कारणे कोनो मोल नहि रहैछ। से सय सफल परीक्षार्थी सँ पूछि ओकर ज्ञानक प्रतिशत सहजे निकालल जा सकैछ।

ई तँ भेल पढ़ाइ-लिखाइक परीक्षाक गप्प मुदा जखन जीवन-संघर्षक सतत् होइत परीक्षाक विषयमे सोचब तँ कोनो ओर-छोर बुझयबे ने करत। कतबो नीक करब, कतबो मेहनति करब समस्या आ संघर्ष घेरनहि रहत। बुझाइत रहत जे एना करब, ओना करब तँ सभ ठीक भऽ जायत मुदा से नहि होयत। एहन-एहन परीक्षा देबय पड़त जे सोचनहू नहि रहब, आभासो धरि नहि होयत मुदा ओकर सामना करहि पड़त। अपना हाथमे किछु नहि रहत। परवश रहब, कखनहुँ प्राकृतिक आपदा, कखनहुँ स्नेहीजनक परलोक विदा होयब, कखनहु नोकरी छुटब तँ कखनहु शारीरिक-मानसिक पीड़ाक सोझां-सोझी होयब आदि परीक्षाक घड़ी आओत आ अहाँकेँ ओहीसँ उबरबाक, पार उतरबाक हेतु ओहन कठिन घड़ीमे अपनहि प्रयास करय पड़त। सत्य पूछी तँ ई परीक्षा पूर्व कहल परीक्षासँ कठिन होइछ।

बालपनमे भरि पेट अन्न लेल तरसब, किशोरावस्थामे प्लूरिसी सन बिमारीसँ ग्रस्त होयब, एम.ए.मे पढ़ैत काले मायक देहान्तक मर्मान्तक पीड़ा भोगब, 34-35 क' वयसमे नोकरीक छूटब, बेकारी-लाचारीक समयमे पिताक संसारसँ उठि जायब, चारि गोट संतान आ पत्नीक संग सालो-साल आर्थिक कष्टसँ जूझब आ आब बुढ़ारीमे जीवन-यापन लेल संघर्ष करैत करैत परीक्षाक अर्थ की होइत छैक से बुझय लगलहुँ अछि। शेष जीवनमे आर कतेक पर-इच्छाक पालन करय पड़त से बूझल नहि अछि मुदा हम सदा तत्पर छी अग्रिम परीक्षा देबाक हेतु आ से पूर्ण मनोबलक संग।

11.20 राति, कोरोना लॉकडाउन-14.4.2020 •

भय

भय अथवा डर जे कही विभिन्न तरहें मनुष्यकें होइत छैक। नेनासँ लऽ कऽ बूढ़ धरि एहिसँ ग्रसित होइत अछि। जेना एखन सम्पूर्ण विश्वक मानव जगत 'कोरोना' वायरसक भयसँ त्रस्त भऽ अपन-अपन घरमे बन्द अछि। मनुष्य डरेक कारणे नीक-बेजाय, ऊँच-नीच कर्म करैत अछि। भयेक कारणे उदंडता, बईमानीसँ बचबाक प्रयास करैत अछि। एक दिन पंडित गोविन्द झाजीसँ पुछलियनि-मनुष्यक सभसँ नीक गुण की? ओ तपाकसँ उत्तर देलनि-'भय'। हम पुछलियनि से कोना तँ ओ बतौलनि समाजक सभ मापदंड भयमे निहित अछि, जँ ई नहि होइत तँ मनुष्य निरंकुश होइत। वस्तुतः मनुष्य अपन सभ अवगुण कें सद्गुणमे बदलबा लेल भयकें सोझांमे राखि कार्य करैत अछि। लोक की कहत, लोक की सोचत भाव नीक करबाक हेतु प्रेरित करैत छैक।

मुदा की आब भयक उपर्युक्त रूप समाजमे देखबामे अबैछ। कैक गोटे फाँसीपर लटकि गेल तें की बलात्कार बन्द भेल! कैक गोटे अत्याचार चोरी, डकैती, घूसखोरी करबाक कारणे सालो सालसँ जहलमे बन्द अछि तें की ई सभ कुकृत्य थम्हल! शीलता-अश्लीलतामे फर्क अछि? पैघ-छोटक विचार रहि गेल अछि की? क्यो कतबो नीक लोक होअय समाजक कतेक लोक ओकरा मोजर दैत अछि? देखय लागब तँ लागत जे आब लोक भयसँ ऊपर उठि निर्भय भऽ गेल अछि। ओकरा अपन बुद्धि, स्वार्थक पूर्तिसँ ऊपर किछु नहि देखाइत छैक।

हमरा आश्चर्य होइत अछि जे कोरोनाक भयसँ आजुक मनुष्य किए डरायल अछि। मृत्यु तँ एक दिन हेबे करतैक, हेतैक, तखन ई भय किएक? की भय अपन पूर्वक स्थितिमे अयबा लेल एना प्रकट भेल अछि जे सत्य-झूठ, उचित-अनुचित, मूढ़ता-विद्वता, मनुष्य-मनुष्यमे प्रेम, सहयोग, समन्वय, भाइचारा, मित्रताक अनुपालन भऽ सकय। से जँ भऽ सकल तँ ठीक आ जँ से नहि भऽ सकल तँ की होयत! मनुष्यक दानवी रूपसँ भयभीत भऽ भय नामक भाव अपन मृत्युकें प्राप्त करत।

हम भयसँ सभ दिन डेराइत छी तेँ हमर आचरण अपकर्मसँ बहुत डेराइत अछि।

हँ, एतेक धरि निश्चित अछि जे हमहूँ एक दिन मरबे करब। तें कोरोनासँ भय नहि होइछ मुदा सत्यनिष्ठ नागरिक होयबाक कारणेँ एहि लॉकडाउनक पालन कऽ रहल छी, भयक कारणे नहि!

दिन 12 बजे, कोरोना लॉकडाउन-14.4.2020 •

चित्तवृति

चित्तवृति मनुष्य जातिक ओ भाव अछि जे ओकर चरित्र निर्माण करैत अछि, ओकर स्वभाव, आचार विचार, व्यवहारकेँ नियंत्रित करैत अछि। ककरो चित्त चंचल, ककरो मंद होइत अछि मुदा ई मानब जे ओ स्थिर अवस्थामे रहैत अछि तँ से सोचब गलत होयत। चित्त कखनो स्थिर नहि रहैत अछि अपितु ओकरामे हरदम विभिन्न प्रकारक उद्वेग अबैत रहैत अछि। प्रायः तेँ महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन' चित्तकेँ, ओकर वृतिक प्रक्रियाकेँ 'मानव मन'क संज्ञा दैत ओकरा संसारक सभसँ तेज चलायमान शक्तिक रूपमे निरूपित कयलनि अछि। ई सत्यो अछि मुदा चित्तक वृति जे कखनो नकारात्मक तँ कखनो सकारात्मक प्रवृति दिस लऽ जाइत अछि तकरे नियंत्रित कऽ सकारात्मक बनौने राखबकेँ हमरा जनैत पुरुषार्थ मानल जाइत अछि। जे अपन चित्तक प्रवृतिकेँ सकारात्मक उर्जा उत्पन्न करबामे लगबैत अछि सैह सफल होइत अछि, यशस्वी होइत अछि।

आइ काल्हि भऽ की रहल अछि-जेना जीहकेँ चटक-मटक नीक लगैत छैक आ ओ चाट-पकौड़ा, चाउमीन-चिली दिस लपकैत अछि तहिना मानव चित्तकेँ हल्लुक विचार, मिथ्या-भिमान, बिनु साधना, बिनु मेहनतिक फुसि-फटक सहयोगसँ सभ किछु प्राप्त करबामे आनन्दक अनुभव होइत छैक। ओकर प्रवृत्ति लज्या, त्याग, करुणा, सहयोग-समन्वयसँ दूर भऽ एकांगी मार्ग अपनबैत अछि। परिणाम शनैः-शनैः ओ चित्तक दुष्प्रवृतिसँ ग्रसित भऽ मानव जीवनक उद्देश्य, सौंदर्य ओ आदर्शसँ दूर भऽ अन्तमे पश्चाताप करैत अछि, अपनाकेँ पापी बुझैत अछि।

ई बात नहि जे हम अपन चित्तवृत्तिकेँ पूर्ण नियंत्रित कऽ लेलहुँ अछि। हँ, आइ धरि जे एकला चलोक स्थिति भेलोपर कऽ सकलहुँ अछि ताहिसँ संतुष्ट अवश्य छी। हमर जे योग्यता, क्षमता आ प्रयास रहल ताहिसँ कनेको कम हमरा भेटल से हम नहि मानैत छी। हमर चित्तक प्रवृतिये अछि जे हमरा असंतोष नहि अछि, ई हमर प्रवृतिये अछि जे सभ मनुष्य केँ नीक मानैत छी, ओकर चित्तक प्रवृतिक कारणे ओकर व्यवहार-वर्ताव जेहन होअय ओ खराब नहि भऽ सकैए से हमर मान्यता अछि।

प्रातः 7 बजे, कोरोना लॉकडाउन-13.4.2020 •

सुख-शान्ति

सुख-शान्ति-ई दुनू शब्द सुनयमे एकरंगाहे भाव दर्शबैत अछि जखन कि एकरा जँ फुटका कऽ देखल जाय तँ दूनू जतबे लग लगैत अछि ततबे दूरी बोध करबैत अछि।

सुख सुविधासँ अरजल भावकेँ द्योतित करैत अछि जाहिमे अभावक चिन्ता नहि होइछ। मुदा एकरा जँ आर सूक्ष्म दृष्टिसँ देखल जाय तँ ई निरंकुश इच्छाकेँ जन्म दैछ जाहिमे संतुष्टि भावक कोनो स्थान नहि रहि जाइछ। एक सुविधासँ प्राप्त सुख आर सुविधा अरजबाक तेहन ने भूख जगा दैत अछि जे ओ कखनो-कहियो समाप्त नहि होइछ। आ यैह भूख कोनो व्यक्तिमे भ्रष्ट आचारण धारण करबा हेतु विवश कऽ दैछ। शान्ति भाव एहि कारणे ओकरासँ दूर भऽ जाइछ आ ओ सभ सुविधा, सभ सुखक अछैत सामान्य निद्रा प्राप्त करबा लेले दवाइ खा कऽ कृत्रिम निद्रा प्राप्त करैछ।

दोसर दिस शान्ति भाव एकटा एहन बोध अछि जाहिमे सुख-सुविधा हो वा नहि ओहिमे संतुष्टिक बोध होइत अछि। केहनो भोजन भेटय, रहबाक केहनो व्यवस्था होअय समस्याक बोझ नहि बुझाइत अछि। जीवनमे मनोबल उच्च भावमे विराजमान रहैत अछि। केहनो परिस्थिति विपरीत होअय, मस्तिष्क सकारात्मक दिशामे अग्रसर रहैत अछि। शान्ति भावक स्थितिवश निद्रा स्वतः अपन कोरमे लऽ लैछ।

हमर प्रयास रहैत अछि जे शान्ति भावमे रही। परिस्थिति आर्थिक, शारीरिक आ मानसिक केहनो होअय अपन मनोबल उच्चे बनल रहय, सकारात्मक सोच बनल रहय। हमर आचरणसँ क्यो दुःखी नहि होअय, पारिवारिक-सामाजिक दायित्वक निर्वाह करैत शान्ति भावमे रही। मुदा ई संभव नहि भऽ पाबि रहल अछि। सुखक अभिलाषा नहि, सुविधाक पाछां भागब स्वभाव नहि। तैयो ई शान्ति भाव किएक दूर अछि ई प्रश्न ककरासँ पुछूं? प्रायः एहि युगमे एकर उत्तर देबा लेल क्यो तैयार नहि होयत!

संध्या 7 बजे, कोरोना लॉकडाउन-12.4.2020 ●

घृणा

घृणा शब्द छोट अछि मुदा एकर पसार वृहद स्तर पर देखल जाइछ। कोनो वस्तुसँ, कोनो व्यक्तिसँ, कोनो सम्प्रदायक प्रति ई प्रभाव देखबैछ। निकृष्ट वस्तुकेँ देखि लोक नाक-भौह सिकोरैछ तँ द्वेषसँ वशीभूत भऽ क्यो आँखि टेढ़ कऽ ककरोसँ घृणा करैछ। ककरो कुकृत्य पर सेहो लोक ओकरासँ घृणा करैछ। क्यो लोभीसँ घृणा करैछ तँ क्यो भोगीसँ। एखन लोक कोरोनाक रोगीसँ घृणा करैत अछि आ ओकरा अपन दुश्मनोसँ बेसी घृणित बुझैत अछि।

सत्य पूछी तँ एखनुका वातावरणे तेहन भऽ गेल अछि जे लोक प्रेम, भाइचारा, स्नेहकेँ त्यागि घृणे भावकेँ प्राथमिकता दैत अछि। के ककरासँ घृणा करैत अछि से बूझब कठिन अछि। परिवारमे, अड़ोस-पड़ोसमे, समाजमे सभतरि घृणाक हवा बहैत स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैछ। बिना बात बुझने, बिना कोनो विचार कयने एहन काज कऽ बैसैत अछि लोक जे ओ स्वयं घृणित बनि जाइत अछि मुदा ओ अनके ढ़ीठतापूर्ण ढ़ंगे घृणासँ देखैत अछि। ई प्रवृति ततेक तेजीसँ बढ़ि रहल अछि जे एहिसँ अनावश्यक क्रोध आ उदंडता बढ़ि रहल अछि। चिकित्सक एकरा बीमारी कहैत अछि मुदा अछि ई हताशा आ असफलताक परिणाम जे घृणा रूपमे पसरि समाजकेँ विकृति कऽ रहल अछि।

हम एहि घृणा भावकेँ अपन श्रृंगार-प्रसाधनक रूपमे लैत छी, एकर कारण अनेक अछि। हमरासँ जुड़ल पंचानवे प्रतिशत लोक हमरासँ घृणा करैत अछि। मुदा ओहि सभ लोककेँ हम अबोध बुझैत छिऐक। हम अपना जनैत ककरो विषयमे ने खराब सोचैत छी आ ने अपन क्रियासँ ककरो अहित करैत छी। अपन क्षमता भरि घर-परिवार, कुटुम्ब-सम्बन्धी, मित्र, ग्राहक, सामाजिक मित्रसँ मदति-सहयोगात्मक भाव रखैत छी। वैचारिक मतान्तर आ वैयक्तिक सोच अलग भऽ सकैछ मुदा ओहिमे अहित, स्वार्थक टकराहटि कथमपि नहि रहैछ।

हम अनकर अपना प्रति घृणा भावकेँ अपन उपयोगी क्रियासँ सकारात्मक भावमे परिवर्तन करबाक प्रयत्न करैत रहैत छी तेँ ई घृणात्मक शब्दक अगिला धाप द्वेष हमरामे नहि पनपैत अछि।

12.30 दिन, कोरोना लॉकडाउन-20.4.2020 •

भोजन

भोजन मनुष्य की प्रत्येक जीव-जन्तु लेल अतिआवश्यक आवश्यकता अछि। समुचित भोजन प्राप्त भेलेपर शारीरिक विकास, मानसिक विकास होइत अछि। भौगोलिक परिस्थिति, आर्थिक स्थिति ओ उपलब्धताक हिसाबे लोक भोजन करैत अछि। क्यो सुस्वाद भोजन करय चाहैत अछि तँ क्यो स्वास्थ्य लेल लाभकारी भोजन करैत अछि। भोजन हेतु व्यंजनक विविधता एतेक बेसी अछि जे क्यो सभ तरहक भोजन नहि कयने होयत मुदा सभकेँ भोजन चाहबे करी ई धरि निश्चित अछि।

मनुष्य वा कोनो जीव जन्तु संघर्ष नहि करैत, काज नहि करैत जँ ओकरा पेट नहि होइतैक। पेटे ओकरा नाना प्रकारक काज करबाक हेतु विवश करैछ, आ जे ओ व्यवस्था नहि कऽ पबैत अछि तकरे लोक निठल्ला वा बेकारक संज्ञा दैत अछि। मुदा ई बात नहि जे ओ ओकर प्रयास नहि करैछ, ओ करैछ, मुदा ओ विभिन्न कारणे सफल नहि होइछ। तेँ की ओकर निरादर होयबाक चाही, नहि, किन्नहुँ नहि!

अपन संस्कृतिमे भोजन करबासँ बेसी भोजन करयबाक मान्यताकेँ धर्म मानल गेल अछि। से सामान्य जीवनमे तँ पालन कयले जाइत अछि आइ कोरोना वायरसक महामारीमे सरकारी स्तरपर ई काज प्राथमिकताक रूपमे सेहो कयल जा रहल अछि। निजी स्तरपर सेहो खगल लोककेँ व्यापक रूपमे भोजन कराओल जा रहल अछि।

भोजन आवश्यक अछि मुदा जेना एहि विकराल समयमे भोजनकेँ राजनीतिसँ जोड़ि, काज कम प्रचार बेसी भऽ रहल अछि से चिन्ताक विषय सेहो अछि। बहुत रास एहन रोजगार अछि जाहिमे पूँजी सेहो लागल छैक मुदा लॉकडाउनमे ओकर काज धंधा बन्द छैक, आमदनी सेहो बन्द छैक। जे मात्र देहक श्रमसँ भोजन जुटबैत अछि तकरा लेल लाखो हजार करोड़क व्यवस्था आ जे जमीन बेचि, ऋण लऽ मात्र भोजन जुटयबाक व्योंत लेल दैनिक मजदूर जकाँ खटैत अछि तकरापर कोनो ध्यान नहि। ई वर्ग अपन भोजन एतेक दीर्घ अवधि धरि कतऽसँ आनत से सोचि परेशान अछि मुदा के देखत, किएक देखत?

की भोजनक अधिकार, घर भेटबाक अधिकार, नगदी सहायता भेटबाक अधिकार, निःशुल्क गैस भेटबाक अधिकार, चिकित्सा भेटबाक अधिकार, सभटा एक वर्गकेँ आ जे बच्चा कानय नहि तकरा भोजनो जुटयबा धरि सहायता नहि? एहने स्थितिमे लोकमे असंतोष बढ़ैत छैक। खटय लेल तैयार, पूंजी तैयार मुदा भोजनक व्योंत नहि। अपन भोजनक व्यवस्था करबाक अधिकार नहि, तखन जीवाक अधिकारक रक्षा कोना होयत?

9 बजे राति, कोरोना लॉकडाउन-19.4.2020 •

पीड़ा

पीड़ा मानवीय जीवनक एकटा अनुभव होइछ जकरा लोक दुःखसँ जोड़ि कऽ देखैत अछि। मुदा ई पीड़ा व्यस्त जीवनशैलीक एकटा ठहराव अछि आ केन्द्रित होमऽवला भाव सेहो अछि से क्यो नहि सोचैत अछि। ई तँ एकात्म भावक अनुभव अछि, जे एहिसँ ग्रसित होइत अछि सैह बुझैत अछि। एहि भावसँ जुड़यवला अरिजन-परिजन, मित्र-परिचित परिचर्या कऽ ओकरा उबारबामे मदति अवश्य करैत अछि मुदा भोगैत वैह टा अछि जकरा पीड़ा होइत छैक। ईहो एकटा भोग होइत छैक जेना लोक सुविधासँ युक्त भऽ सुखक अनुभवक भोग करैत अछि।

क्यो मदिरा पानमे सुखक भोग करैत अछि तँ क्यो अनेक सामाजिक अपकर्ममे भोगक अनुभव करैत अछि। क्यो स्वयं हलुआ पूड़ी, मेवा मिष्ठान खा कऽ सुख भोगक अनुभव करैत अछि। क्यो अनका खुआ कऽ संतुष्टि ओ सुखक अनुभव करैत अछि। सत्कर्म कऽ सुखक अनुभव करैत अछि। मुदा ई दुनू कोटिक लोकक जीवनमे पीड़ा प्रवेश करितहि अछि। एहि अनुभवमे धनीक-गरीब, ऊँच-नीचक भेद नहि रहैछ।

किछु की, निनानवे-साढ़े निनानवे प्रतिशत लोक एहिसँ बचबाक हेतु अनेक प्रकारक प्रयास करैत छथि। मुदा हम, हम तँ पीड़ाकेँ अपन मित्र-सखा वा ई कहू जे अपन अभिन्न अंग मानैत छी। तेँ प्रायः हर परिस्थिति लेल हम तैयार रहैत छी चाहे ओ पीड़ा शारीरिक हो वा मानसिक। कारण हम जनैत छी जे जेना-जेना हमर वयस मृत्यु दिस बढ़ैत जायत ई अपन पसार हमरा पर करैत जायत। मुदा हम एकदम निश्चिन्त आ तैयार छी जे हमरा ई मृत्युये धरि ने खेहारत। मृत्युक बाद की होयत तकर चिन्ता नहि अछि किएक तँ से अनुभव नहि अछि।

लोक पीड़ाक अनुभव नहि करय चाहैत अछि मुदा ई पीड़ा भावे एहन अनुभव अछि, जे नीक मार्ग देखबैत अछि, ज्ञानक आलोकसँ परिचित करबैत अछि। जँ हमरासँ पूछल जाय जे अहाँ पीड़ाक अनुभवसँ युक्त रहय चाहैत छी की सुखक अनुभवसँ। हमर उत्तर होयत-पीड़ासँ, कारण ई हमर सम्पूर्ण जीवनकेँ अपकर्म दिस जयबासँ रोकैत रहल अछि।

कोरोना लॉकडाउन, 8 अप्रैल, 2020 •

इच्छा

इच्छा अनंत होइत अछि। सभक इच्छा अपना अनुसारे जन्म लैत अछि मुदा ओहि सभ इच्छाकेँ पूरा करबाक सक इच्छाकेँ जन्म देनिहारकेँ नहि भऽ पबैत छैक। तखन ओ ओकरा पूरा करबा लेल अनकर मुँह देखैत अछि। क्यो खुलिकऽ बजैत अछि, क्यो मात्र संकेत दैत अछि। जँ ओ व्यक्ति ओकर इच्छा पूरा कऽ देलकैक तँ ठीक अन्यथा मतान्तरक स्थिति उत्पन्न भऽ जाइत छैक।

जँ अबोध इच्छाकेँ पूरा करबाक जिद्द करय तँ बुझबामे अबैछ मुदा जँ चेतन अथवा बालिग दोसर पर अपन इच्छा पूरा करबाक जिद्द धरय तँ की होयत। चाहे तँ ओ पूरा करू अथवा कलह लेल तैयार होउ।

ई इच्छा बड़ झंझटिया उद्वेग अछि। हम अपन इच्छा ककरो पर लदबाक चेष्टा नहि करैत छी मुदा इच्छा रहैत अछि जे अनकर इच्छा पूरा कऽ कऽ ओकरा संग स्वयं आनन्दित होइ।

•

तनाव

आइ जेम्हर देखैत छी-घर-परिवार, समाज वा कोनो व्यक्तिकेँ सभ क्यो तनावमे जीवि रहल अछि। कतहु पति-पत्नीक बीच तनाव अछि, कतहु भाइ-भाइमे तनाव अछि, कतहु बाप बेटामे तनाव अछि तँ कतहु सासु-पुतहु, जमाय-ससुर, भाइ-बहिन वा मित्र-मित्रमे तनाव अछि। व्यावसायिक तनाव, राजनीतिक तनाव, कार्यालयी तनाव, आर्थिक, स्वास्थ्य संबंधी तनावसँ तँ सभ पीड़ित अछिहे मुदा एहिसँ मुक्ति कोना पाबी तकर प्रयास तँ दूर आर एहि तनाव रूपी जंजालमे लोक अपनाकेँ ओझरौने जा रहल अछि।

आपसी सामंजस्य, त्याग, प्रेम, परस्पर सहयोगक संग धैर्य राखि तनावक कारणकेँ जँ ताकल जाय तँ तनाव स्वतः दूर भऽ जायत। कोनो काज करबाक धड़फड़ी कोनो वस्तु पयबाक तीव्र इच्छा अपन-अपन बात मनयबाक जिद्दसँ आत्मनियंत्रण नहि रहि जाइत अछि। जँ अपन औकात, अपन बौद्धिक क्षमता, कार्य क्षमता आ अन्य लोकसँ समन्वय कऽ आगाँ बढ़बाक प्रवृतिकेँ धैर्यपूर्वक संचालित कयल जाय तँ तनावकेँ कम कयल जा सकैत अछि। अहंकारी नहि बनि स्वाभिमानक रक्षा कयल जा सकैछ। क्रोधकेँ शमन कऽ समन्वयी प्रवृतिकेँ विकसित कयल जा सकैछ। अनकर मदति कऽ अपन तनाव कम कयल जा सकैछ। फसाद नहि कऽ वार्ता द्वारा तनाव कम कयल जा सकैछ।

•

अन्तर

ओ अपन जिनगीक तीन हिस्सा पार कऽ गेल अछि। विभिन्न तरहक व्याधि तँ ओकरा घेरनहि छैक जे पैर आ देह सेहो असक भऽ गेल छैक। कहुना कऽ घरसँ निकलि बाहर जा कऽ पैखाना-पेशाब कऽ अबैत अछि। जखन जे किछु भोजन लेल भेटैत छैक खा कऽ निचैन भऽ जाइत अछि। कखनो काल अपन दायित्व बोध भेलापर जोर-जोरसँ हॉक दैत रहैत अछि। अपन बालपनमे सभकेँ मोहैत छलैक, जवानीमे तँ घरक देखभाल करयवला सभसँ समर्थ सदस्य बूझल जाइत छल ओ मुदा आब की आब तँ दिन कटैत अछि आ खा-पीबि कऽ सुतैत अछि तथा जिनगीक शेष दिन खेपि टा रहल अछि।

हमहूँ अपन जिनगीक पैंसठि वर्ष बिता चुकल छी। देहमे सक नहि लगैत अछि टग हनैत जीवन बिता रहल छी। मुदा एहू वयसमे चैन नहि अछि। विभिन्न प्रकारक रोग-व्याधिक अछैत जीवन-यापन लेल कमाय पड़ैत अछि। काज करय पड़ैत अछि। से आमदनीये लेल टा नहि दू कौर अन्न ग्रहण करबा लेल सेहो टोइया-टापर देबऽ पड़ैत अछि। जावत जागल रहैत छी घरक चिन्ता, घरक सदस्यक चिन्ता, आमदनीक चिन्ता, अपन-अनकर सुख-दुःखक चिंता, कार्य-व्यवहारक चिन्तासँ तोपल रहैत छी। मुदा ओ, ओ तँ एहि सभ कथुसँ निश्चिन्त पेट भरिते सूति जाइत अछि, उठितो अछि तँ मात्र अपनामे ओझरायल रहैत अछि।

हमरामे आ ओकरामे अन्तर मात्र एतवे टाजे ओ हमरे घरमे रहनिहार मिट्ठू नामक कुकुर अछि आ हम मनुक्ख छी। ओ एहू वयसमे सभ सदस्यक खेलौड़िया छैक आ हम बारल आ बांतर बूझल जाइत छी। की यैह मनुष्य आ पशुमे अन्तर छैक।

•

प्रेरक

सभ व्यक्ति ककरो ने ककरोसँ प्रेरित भऽ आगाँ बढ़ैत अछि। प्रत्येक स्थितिमे हमरो प्रेरक भेटि जाइत अछि आ हमहूँ ठमकल स्थितिसँ आगाँ बढ़ि जाइत छी।

आब हम 66म वयसमे प्रवेश कऽ गेल छी। सभ प्रकारक काज करबामे असोकर्य होइत अछि, लगले थाकि जाइत छी। होइत अछि जे आबसँ फल्लां काज नहि करब।

आइ अपन आफिसमे बैसल छलहुँ तँ प्रेस सँ किताबक बंडल लऽ कऽ ठेलावला रामू आयल। एक-एक बेरमे पचासक तीन-तीन टा बंडल लऽ कऽ पोथी ऊपरमे आफिसमे पहुँचा देलक आ आबि कऽ ई कहैत बैसि गेल-बड़ थाकि गेल छी, कने सुस्ता लैत छी तँ जायब। पुछलिऐक-वयस कतेक भेलह? 'ओ बाजल-पैंसठि।' ओ आर बहुत रास बात कहलक मुदा हम सुनलिऐक कहाँ किछु।

ओ हमरा प्रेरित कऽ गेल-हम 40 किलोक बंडल लऽ कऽ छतपर कैकबेर चढ़लहुँ अछि तखन थकलहुँ।

पहिने हमरा ऊपर आफिस अयबामे असोकर्य होइत छल, आब नहि होयत ई निश्चय करैत छी। रामू हमरासँ जेठ अछि तखन छोट भऽ कऽ हम किएक नहि!

•

शरदिन्दु चौधरी

जन्म	:	7-10-1956, मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार
माता	:	स्वर्गीय मोती देवी
पिता	:	पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी
शिक्षा	:	एम.ए. राजनीतिशास्त्र, पटना, विश्वविद्यालय, पटना-1, एल.एल.बी., मगध विश्वविद्यालय, गया
वृत्ति	:	पत्रकारिता 1981-84, मिथिला मिहिर, साप्ताहिक 1984-86, मिथिला मिहिर, दैनिक 1987-89, मिथिला मिहिर, मासिक 1995-2002, आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक (फीचर सम्पादक) समय-साल, मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक 2000 सँ 2014 पूर्वोत्तर मैथिल, गुवाहाटी, सम्पादक, 2015-16
सम्प्रति	:	शेखर प्रकाशन (मुद्रक, प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)क व्यवस्थापक - संचालक।
प्रकाशित कृति	:	❖ जँ हम जनितहुँ ❖ बड़ अजगुत देखल ❖ गोबरगणेश ❖ करिया कक्काक कोरामिन (व्यंग्य संग्रह) बात-बातपर बात (संस्मरणात्मक निबंध), मर्मान्तक-शब्दानुभूति।
सम्पादक	:	मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा ❖ साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी ❖ विद्यापति गीतिका (दू भाग) ❖ मैथिली गद्य गौरव ❖ पाठ्य पुस्तक निगमक पांचम वर्गक मैथिली पोथी ❖ अभिमत (हिन्दी)। 20 सँ बेसी स्मारिकाक संपादक। आकाशवाणी, दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता प्रसारित एवं हिन्दी दैनिक तथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित।

सम्पर्क

2A/39, टेक्स्ट बुक कॉलोनी, इन्द्रपुरी, पटना-24
मो.- 09334102305, 91-7759090913
E-mail : choudharyshardindu11@gmail.com



शेखर प्रकाशन, पटना-800024